Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

अल्लाह तआला का आदेश

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

(सूरः बकरः आयत:**202**)

अनुवाद : और उनमें से कोई ऐसा भी है जो कहता है, "ऐ हमारे रब ! हमें दुनिया में भी भलाई अता कर और आख़िरत में भी भलाई अता कर और हमें आग की यातना से बचा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 36
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

11 रबीउल् अव्वल , 1446-47 हिज्री कमरी, 04 तबूक 1404 हिज्री शम्सी, 04 सितमबर 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने इस ग़रज़ से क़सम खाई कि उसके ज़रिये किसी का माल मार ले तो वह अल्लाह से ऐसी हालत में मिलेगा कि वह उससे नाराज़ होगा।

तशरीह: हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं: हज़रत ज़ैद बिन साबित का वाक़िया इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह ने मोअत्ता में नक़ल किया है कि उनका अब्दुल्लाह बिन मुतई से किसी अम्र में झगड़ा हुआ और फ़ैसले के लिए मरवान बिन हकम अमीर मदीना की तरफ़ रुजू किया गया। उन्होंने चाहा कि हज़रत ज़ैद बिन साबित मिनबर नबवी पर जाकर क़सम खाएँ तो उन्होंने कहा कि मैं अपनी जगह पर ही क़सम खाऊँगा। मरवान ने कहा: ला वल्लाहि इल्ला इन्द मक़ातिअिल हुकूक। बारे ख़ुदाया ! वहीं क़सम होगी जहाँ हुक़ूक़ का क़तई फ़ैसला हो सकता है मगर हज़रत ज़ैद बिन साबित ने जहाँ थे, वहीं हल्फ़िया बयान दिया कि वह अपने हक़ के मुतालबे में रास्ती पर हैं। इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत ज़ैद बिन साबित के क़ौल को मरवान बिन हकम के इज्तिहाद पर तरजीह दी है और इसकी ताईद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद का हवाला दिया है जिसमें जगह की तख़्सीस नहीं। झूटी क़सम जहाँ भी कोई खाएगा अज़ाब इलाही का सज़ावार होगा।

यह जो कहा जाता है कि बहुत से उलमा ने इस सिलसिले की मुख़ालिफत की, यह गलत है
खुदा ने अपनी तहदीयों और दावों के साथ इल्मी मोजज़ात हमारी ताईद में दिखा कर यह साबित कर दिया है कि मुखालिफों में कोई आलिम नहीं है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

इल्मी चमत्कार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

''मोजज़ा तो इल्म का ही बड़ा होता है। हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सबसे बड़ा मोजज़ा कुरान शरीफ ही था जो अब तक कायम है। ''यह ज़िक्र तफ़सीर अल्फ़ातिहा के लिखने पर हुआ जो कि हज़रत साहब (पीर मेहर अली शाह) गोलड़वी इत्यादि उलमा के मुक़ाबले में वज्ञापन दे कर लिख रहे हैं।

फ़रमाया: ''आलिम इल्म से पहचाना जाता है। हमारे मुखालिफों में दरअसल कोई आलिम नहीं है। एक भी नहीं है। वरना क्यों मुक़ाबले में अरबी फसीह बलीग़ तफ़सीर लिख कर अपना आलिम होना साबित नहीं करते। एक आँखों वाले को अगर इल्ज़ाम दिया जाए कि तू नाबीना है तो वह ग़ुस्सा करता है। ग़ैरत खाता है और सब्र नहीं करता, जब तक अपना बैना होने का सुबूत न दे। इन लोगों को चाहिए कि अपना आलिम होना अपना इल्म दिखा कर साबित करें। ''

फ़रमाया। ''यह जो कहा जाता है कि बहुत से उलमा ने इस सिलसिले की मुखालिफत की, यह गलत है खुदा ने अपनी तहदीयों और दावों के साथ इल्मी मोजज़ात हमारी ताईद में दिखा कर यह साबित कर दिया है कि मुखालिफों में कोई आलिम नहीं है और यह बात गलत है कि उलमा ने हमारी मुखालिफत की। ''

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 2 सफहा 84, एडीशन 2018, क़ादियान)

बेशक दुनिया में कई आविष्कारक और कारीगर पाए जाते हैं
मगर उनकी इजादात खुदाई इजादात के मुक़ाबले में कोई हक़ीक़त ही नहीं रखतीं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरतु अल्-मोमिनून आयत 13 ता 18 وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

जिस्मानी ख़ल्क़ के आख़िर में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ। क्या ही बरकत वाला है वह खुदा जो सबसे बेहतर तरीक़े से मख़्लूक़ पैदा करने वाला है। यही आयत रूहानी पैदाइश के साथ भी लगती है। यानी जब इंसान रूहानियत में तरक़्क़ी करते-करते इस मक़ाम को हासिल कर लेता है तो उसे एक नई रूहानी पैदाइश अता की जाती है जो तमाम इंसानों को एक अजूबा नज़र आती है। और उसे देखकर हर शख़्स खुदा तआला की हम्द पर मजबूर हो जाता है।

इस आयत के साथ एक तारीख़ी वाक़िया भी वाबस्ता है जिसका यहाँ बयान कर देना ज़रूरी मालूम होता है। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक कातिबे वह्य था जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन अबी सरह था। आप पर जब कोई वह्य नाज़िल होती तो उसे बुलाकर लिखवा देते। एक दिन आप यही आयतें उसे लिखवा रहे थे। जब आप ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ पर पहुँचे तो उसके मुँह से बेइख्तियार निकल गया कि فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यही वह्य है, इसे लिख लो। उस बदबख़्त को यह ख़याल न आया कि पिछली आयतों के नतीजे में यह आयत तबीई तौर पर आप ही बन जाती है। उसने समझा कि जिस तरह मेरे मुँह से यह आयत निकली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस को वह्य क़रार दे दिया है इसी तरह आप नउज़ुबिल्लाह ख़ुद सारा क़ुरान बना रहे हैं। चुनांचे वह मुर्तद हो गया और मक्का चला गया। फत्हे मक्का के मौक़े पर जिन लोगों को क़त्ल करने का रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था उनमें एक अब्दुल्लाह बिन अबी सरह भी था। मगर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे पनाह दे दी और वह आप के घर में तीन दिन छिपा रहा। एक दिन जब कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का के लोगों से बैअत ले रहे थे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को भी आप की ख़िदमत में ले गए और उस की बैअत क़बूल करने की दरख़्वास्त की। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले तो कुछ देर ताम्मुल फ़रमाया मगर फिर आप ने उस की बैअत ले ली। और इस तरह दोबारा उसने इस्लाम क़बूल कर लिया।

اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ के मुतअल्लिक़ यह अम्र भी याद रखना ज़रूरी है कि इसके यह मअनी नहीं कि खुदा तआला के सिवा कोई और भी ख़ालिक़ है... अल्लाह तआला फ़रमाता है कि बेशक दुनिया में कई मोज़िद और सनाअ पाए जाते हैं मगर अल्लाह तआला की इज़ाद और सनअत का उनकी इज़ादों और सनअतों से मुक़ाबला तो करो, तुम्हें मानना पड़ेगा कि उनकी इजादात खुदाई इजादात के मुक़ाबले में कोई हक़ीक़त ही नहीं रखतीं। इस की ऐसी ही मिसाल है जैसे अल्लाह तआला समीअ और बसीर है

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

ये तीन दिन बड़ी बरकतों वाले और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को दिखाने वाले दिन थे। अल्लाह तआला का बड़ा एहसान है कि उसने हमें इन तीन दिनों में अपने बेशुमार फ़ज़्लों से नवाज़ा

एम.टी.ए ने इस बार जैसा कि मैंने पहले भी जलसे के आख़िरी दिन एलान किया था कि दुनिया के तकरीबन छप्पन मुल्कों में एक सौ उन्नीस मराकिज़ के साथ जलसे को जोड़ा

... यह भी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों में से एक बहुत बड़ा फ़ज़्ल है जो उसने जमाअत अहमदिया पर फ़रमाया है कि इन नई इजादात के ज़रिए तमाम दुनिया के अहमदियों को इकट्ठा कर दिया है। उम्मत वाहिदा बनने का यह नज़ारा दुनिया में और कहीं नज़र नहीं आता

यहाँ यह बात भी सब शामिल होने वालों को याद रखनी चाहिए कि जहाँ वे अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें वहाँ काम करने वाले कारकुनों का भी शुक्रिया अदा करें। इस बात का शुक्र करें कि किस तरह अल्लाह तआला ने काम करने वालों के कामों में आसानियाँ पैदा कीं। उनकी मुश्किलात को दूर किया, उनके हर काम में बेहतरी पैदा करने की और उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की खिदमत करने की तौफ़ीक़ दी और इस तरह शामिलीन के लिए सहूलियत के ज़्यादा सामान मयस्सर हुए, बेहतर सामान मयस्सर हुए

मर्दाना जलसा गाह में भी और ज़नाना जलसा गाह में भी कारकुनों में हज़ारों बच्चे बच्चियाँ, लड़कियाँ लड़के, औरतें मर्द शामिल हैं। सब लोगों ने बे नफ़्स होकर खिदमत करने की तौफ़ीक़ पाई और यह सब लोग शामिल होने वालों की शुक्रगुज़ारी के मुस्तहिक़ हैं

मुख्तलिफ़ मुल्कों में प्रेस और मीडिया के ज़रिए करोड़ों अफ़राद तक जलसा सालाना की तश्हीर

जलसा सालाना में तशरीफ़ लाने वाले मुअज़्ज़ज़ मेहमानों के तआस्सुरात

श्रीमान अब्दुल करीम जमाल जौदा साहिब आफ़ ग़ज़ा फ़िलिस्तीन की नमाज़े जनाज़ा ग़ाइब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 01 अगस्त 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले रविवार को अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जलसा सालाना यूके अपने इख़्तिताम को पहुँचा था। ये तीन दिन बड़ी बरकतों वाले और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को दिखाने वाले दिन थे। अल्लाह तआला का बड़ा एहसान है कि उसने हमें इन तीन दिनों में अपने बेशुमार फ़ज़्लों से नवाज़ा और जलसे को हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाया और जलसा बख़ैर व ख़ूबी इख़्तिताम को पहुँचा।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मौसम भी अच्छा रहा और तमाम प्रोग्राम बड़ी ख़ुश असलूबी से इख़्तिताम पज़ीर हुए। जलसे की बुनियादी काररवाई यानी तक़रीरों और दूसरे प्रोग्रामों के अलावा तबलीग़ी और मालूमाती लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ शोबा जात ने नुमाइशों की जो तरतीब दी हुई थी उसका भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ग़ैरों पर बहुत अच्छा असर हुआ और अक्सर लोगों को, अहमदियों को भी अपनी मालूमात में मज़ीद इज़ाफ़ा की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह एमटीए ने भी जलसा की काररवाई के दरमियानी वक़्फ़ों में मुख़्तलिफ़ मालूमाती प्रोग्राम दिखाए और मालूमात दीं जिनका लोगों पर बहुत अच्छा असर हुआ। दूसरे मुल्कों में बैठे हुए अहमदियों ने भी इसे बड़ा पसंद किया कि हमें भी बहुत सी नई बातें पता लगीं और इसी तरह एमटीए ने इस बार जैसा कि मैंने पहले भी जलसे के आख़िरी दिन एलान किया था कि दुनिया के तकरीबन छप्पन मुल्कों में एक सौ उन्नीस मराकिज़ के साथ जलसे को जोड़ा।

इस राब्ते के ज़रिए दोनों तरफ़ से लोग एक दूसरे को देख सकते थे हम यहाँ से उन्हें देख सकते थे और वे वहाँ से बराहे रास्त हमें देख रहे थे। महज़ टीवी की नश्रीयात नहीं थीं जो वे सुन रहे थे बल्कि बराहे रास्त राब्ता भी था जिसका बहुत गहरा और अच्छा असर हुआ। इस असर को सिर्फ़ यहाँ मौजूद लोगों ने ही महसूस नहीं किया। यहाँ भी लोगों ने इसे बड़ा पसंद किया बल्कि मुख़्तलिफ़ मुल्कों में बैठे जलसा सुनने वालों के जज़्बात और एहसासात भी यही थे कि गोया वे जलसा गाह की मार्की में बैठे जलसा सुन रहे हैं। हज़ारों मील दूर बैठे थे लेकिन अल्लाह तआला ने इस ज़रिए से उन्हें यूँ जलसा सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई कि वे ख़ुद को वहीं हाज़िर महसूस कर रहे थे। पस यह भी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों में से एक बहुत बड़ा फ़ज़्ल है जो उसने जमाअत अहमदिया पर फ़रमाया है कि इन नई इजादात के ज़रिए तमाम दुनिया के अहमदियों को इकट्ठा कर दिया है। उम्मत वाहिदा बनने का यह नज़ारा दुनिया में और कहीं नज़र नहीं आता।

इस बार उमूमन तौर पर इंतेज़ामात भी गुज़िश्ता सालों की निस्बत बहुत बेहतर थे और अक्सर ने इसका इज़हार किया है। यहाँ शामिल होने वालों ने भी और टीवी पर मुख़्तलिफ़ मुल्कों में प्रोग्राम देखने वालों ने भी यह कहा है। एक ख़ास माहौल था और यह सब अल्लाह तआला का एक ख़ास फ़ज़्ल है जो हर एक को ग़ैर मामूली तौर पर महसूस हो रहा था कि जलसा पर अल्लाह तआला की ख़ास बरकात नाज़िल हो रही हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम उसके शुक्रगुज़ार बंदे बनो और जब तुम शुक्र गुज़ारी करोगे तो मैं तुम्हें अपने फ़ज़्लों से और ज़्यादा नवाज़ों गा और ज़्यादा फ़ज़्ल तुम पर बरसाऊँ गा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ (इब्राहीम:8) कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे, शुक्रगुज़ार बनोगे तो मैं तुम्हें और भी ज़्यादा दूँ गा। पस अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के मज़ीद वारिस बनने के लिए शुक्रगुज़ारी की ज़रूरत है।

अल्लाह तआला ने अपने बारे में यह फ़रमाया कि إِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ (अल-बक़रा:159) कि यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत क़दरदान और जानने वाला है। जब अल्लाह तआला के लिए शुक्र का लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है तो वह क़दरदानी के मअनी में इस्तेमाल होता है। पस अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों की

क़दर करता है और इस क़दर के नतीजे में फिर अल्लाह तआला उनको और नवाज़ता चला जाता है। अल्लाह तआला तो मालिक है उसने बंदों का शुक्रिया तो अदा नहीं करना बल्कि उसका क़दर करना ही उस शुक्रगुज़ारी की क़दर करना है जो बंदे कर रहे हैं। पस वह इल्म भी रखता है और उसे पता है कि कौन हक़ीक़ी शुक्रगुज़ार है। अगर शुक्रगुज़ारी हक़ीक़ी होगी तो वह मज़ीद नवाज़ता चला जाएगा। यह सिर्फ़ बातें नहीं होनी चाहिएँ बल्कि शुक्रगुज़ारी का एक जज़्बा होना चाहिए और यह जज़्बा अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से जमाअत में बहुत पैदा किया हुआ है। अल्लाह तआला इसे बढ़ाता चला जाए।

यहाँ यह बात भी सब शामिल होने वालों को याद रखनी चाहिए कि जहाँ वे अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें वहाँ काम करने वाले कारकुनों का भी शुक्रिया अदा करें। इस बात का शुक्र करें कि किस तरह अल्लाह तआला ने काम करने वालों के कामों में आसानियाँ पैदा कीं। उनकी मुश्किलात को दूर किया, उनके हर काम में बेहतरी पैदा करने की और उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ दी और इस तरह शामिलीन के लिए सहूलियत के ज़्यादा सामान मयस्सर हुए, बेहतर सामान मयस्सर हुए।

इस साल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जैसा कि पहले मैंने गुज़िश्ता जलसे के आख़िरी दिन बताया था कि छियालीस हज़ार से ऊपर हाज़िरी थी बल्कि लजना की बाद की जो रिपोर्ट है उसके अन्दाज़े के मुताबिक़ उनकी गिनती सही तरह शुमार नहीं हुई और उन्होंने बाद में अपनी गिनती की जो रिपोर्ट भेजी है उसे शामिल किया जाए तो मर्दों और औरतों को मिला कर कुल तादाद पचास हज़ार बन जाती है क्योंकि वह कहती हैं हम पच्चीस हज़ार थीं। पस इन पचास हज़ार शामिल होने वाले लोगों को शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि किस तरह अल्लाह तआला ने काम करने वालों के ज़रिए उनके लिए आसानियाँ पैदा कीं। उन्हें ट्रांसपोर्ट के मामले में दुश्वारी पैदा नहीं हुई। खाने के मामले में दुश्वारी पैदा नहीं हुई और जलसे के प्रोग्राम सुनने के मामले में कोई दुश्वारी पैदा नहीं हुई और उनकी दूसरी मुख़्तलिफ़ ज़रूरतें पूरी होती रहीं। रिहाइश का भी इंतज़ाम था और काफ़ी मुनासिब था। चुनाँचे जो मेहमान जमाअती रिहाइश गाहों में ठहरे उनके लिए बेहतर इंतज़ाम हुआ। पस यह सारे काम जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हुए उस पर हमारा कोई कमाल नहीं बल्कि उन पर अल्लाह तआला का फ़ज़ल है। जहाँ काम करने वाले शुक्रगुज़ार हों वह भी यह शुक्रगुज़ारी करें कि अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ दी और हमारे कामों के बेहतर नतीजे अता फ़रमाए वहाँ शामिल होने वालों को भी शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उनके लिए किस तरह सामान मुहैया फ़रमाए कि बेशुमार लोगों ने जो मुख़्तलिफ़ तबक़ों और मुख़्तलिफ़ तालीमी मेयारों से ताल्लुक़ रखते थे सब ने रात दिन एक कर के अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर रज़ाकाराना तौर पर अपनी ड्यूटियाँ दीं।

मुख़्तलिफ़ शोबों में जैसा कि मैंने कहा मर्दाना जलसा गाह में भी और ज़नाना जलसा गाह में भी कारकुनों में हज़ारों बच्चे बच्चियाँ, लड़कियाँ लड़के, औरतें मर्द शामिल हैं। सब लोगों ने बे नफ़्स हो कर ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ पाई और यह सब लोग शामिल होने वालों की शुक्रगुज़ारी के मुस्तहिक़ हैं।

इसी तरह कनाडा और ऑस्ट्रेलिया से भी ख़ुद्दाम बड़ी तादाद में आए हुए थे उन्होंने जलसे से पहले भी जलसे के काम में मदद की, जलसे के दरमियान भी और बाद में भी वाइंड अप में मदद कर रहे हैं। तो अल्लाह तआला इन सब को भी जज़ा दे। एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला ने अपने बंदों को फ़रमाया कि मेरे फलाँ बंदे ने तुम पर एहसान किया था और तुमने उसका शुक्रिया अदा नहीं किया तो बंदा कहेगा ऐ अल्लाह! एहसान तो तूने मुझ पर किया था मैंने तेरा शुक्रिया अदा किया है और करता हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाएगा नहीं मैंने उस बंदे के ज़रिए से तुम पर एहसान किया था और तुम्हारे काम हुए थे। इसलिए उस बंदे का शुक्र अदा करना भी ज़रूरी है।

(माख़ूज़ अज़ मजमा उज़-ज़वाइद जिल्द 8 सफ़्हा 233 किताब अल-बर्र वस-सिलह बाब शुक्र अल-मअरूफ़ ... हदीस 13634 दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बैरूत 2001 ई.)

पस अल्लाह तआला तो अपने बंदों के इन कामों की जो उसकी ख़ातिर किए जा रहे हों उस क़दर क़दर करता है कि फ़रमाता है उनका शुक्रिया अदा करो और हम से भी यही चाहता है कि हम अल्लाह तआला के बंदों के शुक्रगुज़ार बनें ता कि फिर एक ऐसा माहौल पैदा हो जो मुकम्मल तौर पर शुक्रगुज़ारी का माहौल हो जिस में हर तरफ़ से शुक्रगुज़ारी हो रही हो और यही चीज़ हमें हमेशा याद रखनी चाहिए। यह सब काम करने वाले लोग जैसा कि मैंने कहा शुक्रगुज़ारी के मुस्तहिक़ हैं। ग़ैरों पर भी इसका बहुत असर है। उनके जज़्बे को देख कर उन पर असर होता है। हैरान हो रहे होते हैं कि किस तरह बच्चे भी ड्यूटियाँ दे रहे हैं, पानी पिला रहे हैं। रोटी पकाने, मेहमान नवाज़ी और मुख़्तलिफ़ जगहों पर सफ़ाई वग़ैरह पर किस तरह ख़ुशी से काम कर रहे हैं। यहाँ आए हुए मेहमानों के जो तआस्सुरात मिले हैं एक नहीं बल्कि कई तआस्सुरात ऐसे हैं कि हमने मुख़्तलिफ़ काम करने वालों से पूछा कि आप क्या काम करते हैं? हमाराख़्याल था कि जिस तरह वह काम कर रहे हैं वह शायद कोई मज़दूरी वग़ैरह करते होंगे। किसी ने बताया कि मैं एक फर्म में एक अफ़सर हूँ। किसी ने बताया कि मैं पढ़ाता हूँ। किसी ने कहा मैं पीएचडी का तालिबे इल्म हूँ। किसी ने पीएचडी की कोई डिग्री हासिल की हुई है, तो इस तरह का जज़्बा रखने वाले मौजूद हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलात वस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत के लिए और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए अपने आप को पेश करते हैं।

पस यह बात इस चीज़ का तक़ाज़ा करती है कि सब शामिल होने वाले इन लोगों के शुक्रगुज़ार हों और कारकुनों को भी इस बात पर शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि अगरचे सारा साल उन्हें तबलीग़ या जमाअत का पैग़ाम पहुँचाने काइस तरह मौक़ा नहीं मिलता जो इसका हक़ है लेकिन यहाँ जलसे पर ड्यूटियाँ देते हुए उनकी मुलाक़ात मुख़्तलिफ़ लोगों से होती है। यहाँ ग़ैर भी आते हैं। मुख़्तलिफ़ मुल्कों से ऐसे लोग आते हैं जिनका जमाअत से इब्तिदाई तआरुफ़ होता है और वह यह देखने आ रहे होते हैं कि क्या वाक़ई यह लोग वही हैं जो यह कहते हैं और जब वह इन कारकुनों को जो मुख़्तलिफ़ पेशों से ताल्लुक़ रखते हैं इस तरह काम करते देखते हैं और हर एक आम मज़दूरों वाला काम कर रहा होता है तो उन को देख कर उन पर इसका बड़ा असर होता है। एक ख़ामोश तबलीग़ है जिस का वह इज़हार भी कर देते हैं। इस इज़हार के कुछ नमूने पेश करूँगा क्योंकि बेशुमार नमूने हैं। बेशुमार लोग मुझे अपनी राय भेज रहे हैं कि अल्लाह तआला किस तरह लोगों के दिलों पर असर डालता है। जहाँ वह जलसे की तक़रीरों से मुतास्सिर हो रहे होते हैं वहाँ हमारे कारकुनों के कामों और बच्चों के रवैयों से भी मुतास्सिर होते हैं। पस यह ख़ामोश तबलीग़ और इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम है जो जमाअत अहमदिया के ज़रिए लोगों तक पहुँच रहा है।

इसी तरह, जो नए आने वाले हैं, यानी जो जमाअत में शामिल हो रहे हैं या जो पहली बार यहां आते हैं, वे भी प्रोत्साहित होते हैं। वे देखते हैं कि किस सम्मान और आदर के साथ उनकी मेहमाननवाजी की जा रही है? यहां के लोग उनसे किस तरह पेश आ रहे हैं? अतः यह एक बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है और हम सबको अल्लाह ता'आला का शुक्रगुजार होना चाहिए। कुछ विचार, जैसा कि मैंने कहा, मैं प्रस्तुत करता हूँ। रॉड्रिग्स द्वीप की पुलिस बल के सहायक कमिश्नर, श्री मनोज लोचन, जो यहां आए हुए थे, कहते हैं: मैंने पुलिस कमिश्नर और डिवीजनल कमांडर के रूप में कई सरकारी और सामाजिक समारोहों में भाग लिया है, लेकिन जलसे के दिनों में मैंने जो देखा, वह वास्तव में एक मिसाल थी। यह संगठन और अनुशासन का एक अनमोल सबक था। दस हजार स्वयंसेवकों की उपस्थिति एक अद्भुत चमत्कार थी। सभी ने बेमिसाल समर्पण के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा की। मैंने एक स्वयंसेवक को देखा। उसका हाथ घायल था। यद्यपि हाथ पट्टी में लिपटा हुआ था, फिर भी वह मुस्कान के साथ दूसरों की सेवा कर रहा था। कहते हैं कि मैं डॉक्टरों, आईटी पेशेवरों, व्यवसायियों, पीएचडी धारकों से मिला, सभी विनम्रता और दृढ़ संकल्प के साथ सेवा का काम कर रहे थे। वह ड्राइवर जो हमें वार्षिक जलसे में ले गया, जब मैंने उससे उसका पेशा पूछा, तो उसने कहा कि उसने जैव रसायन में पीएचडी की हुई है। इसका मुझ पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। मैंने अपने जीवन में कभी भी समुदाय के उद्देश्य के लिए ऐसा समर्पण और विनम्रता अनुभव नहीं की। फिर वह कहते हैं: कार्यक्रम बहुत अच्छा था। सुरक्षा का इंतजाम बहुत अच्छा था। वैसे, हर चीज़ ने मुझ पर एक गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ा है और मैं अपने देश वापस लौट रहा हूँ, लेकिन मेरे पास अपने साथी पुलिसकर्मियों और परिवार के सदस्यों को बताने के लिए बहुत कुछ है, जो यादें मैं यहां से लेकर जा रहा हूँ।

बेल्जियम के एक मेहमान, हंस नूट, जो मानवाधिकार संगठन HRWF के प्रतिनिधि हैं, जलसे में शामिल हुए। कहते हैं कि असाधारण सभा का हिस्सा बनना मेरे लिए वास्तविक खुशी थी। यह केवल एक यादगार अनुभव ही नहीं, बल्कि आपकी गर्मजोशी और उत्कृष्ट मेहमाननवाजी के कारण यह एक गहरा प्रभाव छोड़ने वाला अनुभव बन गया है। इतने बड़े पैमाने पर एक सभा का आयोजन, जिसमें हजारों लोग कई दिनों तक शामिल रहे, निश्चित रूप से एक

असाधारण सफलता है। स्वयंसेवकों से बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि प्रत्येक विभाग कई महीने पहले से तैयारी शुरू कर देता है। जिम्मेदारियां सौंपी जाती हैं और व्यक्तियों को अत्यंत स्पष्ट तरीके से प्रशिक्षित किया जाता है। मुझे न केवल प्रशासनिक कौशल, बल्कि उसके पीछे की नैतिक नींव भी प्रभावशाली लगी। प्रशिक्षक केवल नियमों की व्याख्या नहीं करते, बल्कि अल्लाह और मानवता की सेवा, विनम्रता और प्रत्येक मेहमान के सम्मान जैसी मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। ये मूल्य हर जिम्मेदारी में प्रमुख थे। कार पार्क में मार्गदर्शन करने वाले, शौचालयों को साफ करने वाले, खाना परोसने वाले, पंजीकरण करने वाले या सुरक्षा पर बैग की जांच करने वाले हर व्यक्ति ने अपनी जिम्मेदारी को गरिमा और स्नेह से निभाया। एक गैर-पक्षपाती मेहमान के तौर पर मैंने अत्यंत सुव्यवस्थित प्रणाली देखी, न ही किसी बड़ी समस्या या संघर्ष का अवलोकन या जिक्र सुना। यह दर्शाता है कि आपकी जमाअत ने शांति और अहिंसा के व्यावहारिक प्रशिक्षण को गहराई से अपना लिया है। और फिर वह कहते हैं कि जो महत्वपूर्ण पहलू मैंने देखा, वह शिक्षा और बौद्धिक विकास के लिए आपकी जमाअत की गंभीरता है। जलसे के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों की घोषणाएं हुईं और यह कदम व्यक्तिगत विकास और ज्ञान के सम्मान को दर्शाता है। और फिर वह कहते हैं कि जलसे के दौरान मैंने बार-बार वास्तविक सहानुभूति के प्रदर्शन देखे। माता-पिता की अपने बच्चों के प्रति स्नेह, समूह नेताओं का अपनी टीमों की देखभाल, स्वयंसेवकों का स्वेच्छा से मदद के लिए आगे बढ़ना, मेहमानों से, चाहे वे अजनबी ही क्यों न हों, पूछना कि आप क्या सेवा कर सकते हैं? और आम तौर पर लोग अपनी जिम्मेदारियों से बढ़कर सेवा करते नजर आए और फिर यह कहता है कि यह देखकर मैं सुखद आश्चर्यचकित हुआ कि आपकी जमाअत आध्यात्मिक नवीनीकरण और बौद्धिक विस्तार से जुड़ी हुई है। मुझे खुशी हुई कि आपके विश्वास के अनुसार अल्लाह ता'आला आज भी मनुष्यों से बात करता है और अल्लाह ता'आला ने अपनी विशेषता को नहीं छोड़ा है, बल्कि नेक नेतृत्व और प्रेरणा के माध्यम से अल्लाह ता'आला ने अपना काम जारी रखा हुआ है।

ब्राज़ील से प्रांतीय संसद के सदस्य यूरी मौरा (Yuri Moura) हैं। वह कहते हैं कि मुझे जलसे में इस्लाम की अत्यंत ज्ञानवर्धक शिक्षाएं जानकर दिली खुशी हुई। नमाज़ों का दृश्य अत्यंत रूह को छूने वाला था। इसी तरह, जो कविताएँ पढ़ी गईं, वे दिल में उतरती चली गईं। यह मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था और मेहमाननवाजी पर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का जो ख़िताब था, उसने भी मुझ पर असर किया और मुझे इस बात से आश्चर्य हुआ कि यह एक अस्थायी व्यवस्था थी और छियालीस हज़ार लोग यहाँ एकत्रित हुए थे। मैंने अपनी आँखों से छोटे बच्चों को देखा, वे स्वयं यह इच्छा व्यक्त कर रहे थे कि वे लोगों को पानी पिलाने की सेवा करें। सेवा और त्याग की यह भावना प्रशिक्षित हृदयों में ही हो सकती है और फिर इससे भी प्रभावित हुआ कि अहमदी वास्तव में प्रेम करने वाले, आदरणीय और निष्ठावान लोग हैं और यह एक ऐसी जमाअत है जो मनुष्यों, राष्ट्रों और धर्मों के बीच दूरियाँ पैदा करने के बजाय प्रेम और स्नेह से दिलों को जोड़ने का पाठ पढ़ाती है, और यह बिल्कुल सच है कि जमाअत-ए-अहमदिया जो शिक्षा देती है, उस पर अमल करती है, जो दुनिया के लिए एक मिसाल है, और कहते हैं कि मुझे भी यह बातें देखकर मेरे दिल को बड़ी शक्ति मिली है और मेरे विचार भी मानवता के लिए और बेहतर हुए हैं। फिर वह कहते हैं कि आपका धर्म मेरे धर्म से भिन्न हो सकता है, लेकिन यह निश्चित रूप से एक ऐसा धर्म है जो मनुष्यों को अलग नहीं करता, बल्कि जोड़ता है, और मेरी दुआ है कि आप हमेशा इस प्रकाश स्तंभ बने रहें। जमाअत-ए-अहमदिया ब्राज़ील में और दुनिया भर में सुरक्षित रहे और तरक्की करती रहे। मैं लोगों को, विशेषकर ब्राज़ील के लोगों को कहना चाहूँगा कि वे जमाअत-ए-अहमदिया को आकर देखें कि अहमदी दुनिया भर में आध्यात्मिक, धार्मिक, शैक्षणिक और मानवीय क्षेत्रों में किस तरह अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

फिर रोस्टियो कार्ट्स (Rostio Cortes) हैं। वे चिली से संबंध रखती हैं। कैथोलिक विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र और अंतरधार्मिक संवाद की प्रोफेसर हैं। विभिन्न अंतरधार्मिक समारोहों में शामिल होती रहती हैं। इस वर्ष जलसे में शामिल हुईं। कहती हैं कि जलसे जैसी कोई भी ऐसी घटना, जिसमें इस कदर कुशलता के साथ गहराई से हर पहलू का इंतज़ाम किया गया हो, यह एक अद्वितीय घटना है। महोदया ने बताया कि पहले दिन उनकी यह कोशिश थी कि जितना संभव हो कम से कम खाया-पिया जाए, ताकि वाशरूम जाने की आवश्यकता महसूस न हो। महोदया का विचार था कि इतने बड़े जनसमूह को देखते हुए, जैसा कि सांसारिक मेलों में होता है, वैसा ही हाल इस जलसे में भी होगा, वाशरूम वगैरह गंदे होंगे और प्रयोग करने योग्य नहीं होंगे, मुश्किल पेश आएगी। बहरहाल, जब महोदया को आवश्यकता महसूस हुई, तो कहती हैं कि उन्हें यह देखकर बड़ी हैरानी हुई। उन्होंने बाद में हमारे प्रतिनिधि को, जिनके साथ वे थीं, कहा कि आप लोगों के सफाई का स्तर बेमिसाल है और वाशरूम ऐसे लगते हैं मानो किसी ने उनका इस्तेमाल ही न किया हो। कुछ लोगों ने शिकायत भी की है कि शौचालय गंदे थे, लेकिन हमारे अह्मदी लोग हैं जो शिकायत कर रहे हैं, जबकि मैंने अह्मदियों से कई बार कहा है कि वे स्वयं सफाई करने वालों की मदद करें और स्वयं जब इस्तेमाल करते हैं, तो उसके बाद अच्छी तरह साफ करके आएं। यदि हर अह्मदी स्वयं इस ओर ध्यान दे, तो ये मानक और बेहतर हो सकते हैं। इसी तरह, महोदया ने जमाअत की आपसी भाईचारे और एकता के बारे में उल्लेख किया कि हम लैटिन अमेरिका से आए हुए गैर-जमाअती मेहमान भी आप लोगों के रंग में रंग गए हैं। आपके जलसे के माहौल के प्रभाव से हम में भी यही भावना जागृत हुई है। जलसे से पहले हम एक-दूसरे को जानते नहीं थे और जलसे के कारण अब ऐसा लगता है मानो हम एक परिवार हों।

बेनिन से एक मेहमान महिला चबी एडम तारो (Chabi Adam Taro) आई थीं। सामाजिक मामलों की मंत्री रह चुकी हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय सभा की अध्यक्षा की राजनीतिक तकनीकी सलाहकार के रूप में काम कर रही हैं। कहती हैं कि यह मेरा पहला अनुभव है कि मैं वार्षिक जलसे में भाग ले रही हूँ। मैं इस आध्यात्मिक सभा में भाग लेने पर बहुत आभारी हूँ, जिसे अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने अत्यंत कुशलता से आयोजित किया है। मेरा बहुत ही हार्दिक स्वागत किया गया, अभिनन्दन किया गया। बहुत व्यवस्था और अनुशासन था। सभी टीमों ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के पैगामों ने इस अवसर को और भी ऊँचा कर दिया और मैं बहुत कुछ यहाँ से सीख कर जा रही हूँ। यहाँ वार्षिक जलसा एकता का भी प्रतीक है। यहाँ विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों से संबंध रखने वाले भाई और बहनें एकत्रित होते हैं और अल्लाह ता'आला और क़ुरआन करीम के एक ही संदेश में जुड़े रहते हैं। और फिर कहती हैं कि मैं इन लोगों का शुक्रिया अदा करती हूँ और राष्ट्रीय सभा के अध्यक्ष और बेनिन की जनता की ओर से भी शुक्रिया अदा करती हूँ जिन्होंने इतने उत्साह से मेरा इंतज़ाम किया, स्वागत किया और व्यवहार किया।

अर्जेंटीना से एक मेहमान गैस्टन ओकैंपो (Gaston Ocampo) हैं। वह वर्तमान में पुर्तगाल में रहते हैं। वह आईपीडीएएल (IPDAL) के महासचिव के रूप में काम कर रहे हैं, जो एक प्रतिष्ठित थिंक टैंक है। वह कैथोलिक हैं लेकिन इस्लाम में भी रुचि रखते हैं। कहते हैं कि जलसे के दौरान मुझे आपकी जमाअत की कई खूबियाँ देखने का मौका मिला, जिनमें मुझे सबसे बढ़कर यह पहलू पसंद आया कि आपके युवा अपने धर्म से जुड़े हुए हैं और अपनी शिक्षाओं पर मजबूती से अमल कर रहे हैं। कहने लगे कि हमारे समाज में अक्सर औपचारिक ईसाई हैं और अपनी शिक्षाओं पर अमल नहीं करते। इसी तरह, हमारी कैथोलिक समारोहों में अधिकांशतः बड़ी उम्र के लोग होते हैं, जबकि आपके जलसे में न केवल उपस्थित लोग, बल्कि महत्वपूर्ण सेवाएँ भी युवाओं को सौंपी गई थीं। कहते हैं कि मुझे एक ओर तो यह देखकर बहुत अच्छा लगा और साथ ही कैथोलिक के तौर पर शर्म भी आई कि हममें वह अनुशासन का स्तर नहीं है जो आप लोगों में है। और आप लोग अपने ख़लीफ़ा का जो आदर करते हैं और जिस तरह सम्मान करते हैं, जिस तरह उनसे अपने जुड़ाव को व्यक्त करते हैं, वह भी एक मिसाल है।

इटली से एक मेहमान, जियोर्जिया लाकुएल (Giorgia Lacuele) हैं। वह यूरोपियन संसद की इटली में आधिकारिक प्रेस एजेंसी की निदेशक हैं। कहती हैं कि मैंने सोचा कि यह महज़ एक धार्मिक जमावड़ा होगा, लेकिन मैं गलत थी। वार्षिक जलसा एक वास्तविक भावनात्मक अनुभव है जो आत्मा पर गहरा निशान छोड़ता है। ऐसा महसूस होता है जैसे मैं एक ऐसी दुनिया में प्रवेश कर गई हूँ जहाँ विश्वास, भाईचारा और आध्यात्मिकता महसूस होने लगी है, जो आपस में जुड़े हुए हैं। दुनिया के विभिन्न कोनों से आए हजारों लोगों को एक ही उद्देश्य के लिए एकत्रित देखना, अल्लाह और मानवता से संबंध मजबूत करना मेरे लिए अत्यंत प्रभावशाली अनुभव था। जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वह शानदार व्यवस्था थी और यह कि सब कुछ स्वयंसेवकों द्वारा अंजाम दिया जा रहा था, जिनमें बच्चे, युवा, पुरुष और महिलाएं सभी शामिल थे

और सब अत्यंत दयालु और मिलनसार थे। यह सब जमाअत-ए-अहमदिया के मूल संदेश - शांति, सेवा और निस्वार्थ प्रेम - की व्यावहारिक तस्वीर है, और फिर कहती हैं कि एक चीज जो हमेशा मेरे दिल में अंकित रहेगी, वह दुआ का वह क्षण है जिसमें भाग लेने का अवसर मिला। यह मौन गहरे अर्थों और संबंध से परिपूर्ण था। कहती हैं कि मेरे लिए वार्षिक जलसा सिर्फ एक समारोह नहीं, बल्कि आत्म-निरीक्षण और दूसरों से व्यवहार के बारे में सोचने का निमंत्रण था। इसका प्रभाव गैर-अहमदियों पर भी इसी तरह पड़ता है।

केप वर्डे द्वीप की राजधानी "प्रया" के उप-मेयर फर्नांडो पेंटो (Fernanda Jorge Taraves Pinto) जलसे में आए। कहते हैं कि मैं जलसे के बारे में अपने जज़्बातों को शब्दों में बयां नहीं कर सकता। मेरी पैंसठ साल की उम्र है और मैंने दुनिया में बड़ी-बड़ी कॉन्फ्रेंसें अटेंड की हैं, लेकिन जलसे जैसी बड़ी और व्यवस्थित कॉन्फ्रेंस कहीं अटेंड नहीं की, जहाँ छियालीस हजार से अधिक लोग शामिल हुए और हर व्यक्ति एक-दूसरे से प्यार और मोहब्बत से मिल रहा था और सब लोग एक परिवार का हिस्सा लग रहे थे। कहते हैं कि इस समय दुनिया में शांति के लिए ईश्वर की आवश्यकता है। मेरी इच्छा है कि जमाअत-ए-अहमदिया का संदेश हमारे देश में फैले। हमारे नेताओं तक भी यह संदेश पहुंचे। हमारे देश में भी जमाअत-ए-अहमदिया के मिशन खुलें। और कहते हैं कि मैंने इमाम जमाअत की सभी तक़रीरें सुनी हैं। मेरे दिल को उन्होंने छुआ है और यह संदेश दुनिया के सभी नेताओं को भी सुनना चाहिए ताकि उन्हें भी अपनी जिम्मेदारियों का एहसास हो।

बेलिज़ से नव-मुस्लिम एथन मारियानो (Ethan Mariano) हैं। कहते हैं कि जलसे में शामिल होकर और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से मिलकर मेरा विश्वास बहुत बढ़ गया। और फिर यह कहते हैं कि मैं ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का अपनी आख़िरी साँस तक वफ़ादार रहूँगा और मैं ख़िलाफ़त से मोहब्बत करता हूँ। फिर कहते हैं कि पश्चिमी समाज हमें यह सिखाता है कि अगर कोई आपके लिए कुछ कर रहा है, तो बस करने दो। मगर यहाँ हर व्यक्ति इस कोशिश में है कि ज़्यादा से ज़्यादा सेवा करे ताकि ज़्यादा बरकत हासिल हो। हर कोई अपनी सीमा से बढ़कर मदद कर रहा है। यह देखकर बहुत खुशी हुई कि उम्र या पीढ़ी की कोई परवाह नहीं। सब एक-दूसरे से मोहब्बत रखते हैं और सेवा करना चाहते हैं। लोगों से बातचीत के दौरान यह बात स्पष्ट हुई कि यहाँ लोग जनसेवा को अपने पेशे से ज़्यादा अहमियत देते हैं। वे अपनी नौकरियाँ छोड़कर इन बरकतों को हासिल करना ज़्यादा महत्वपूर्ण समझते हैं। कहते हैं कि जलसे के बाद मेरी ज़िंदगी में जो बदलाव आया, वह आश्चर्यजनक है। ख़िलाफ़त की कद्र न जानने से लेकर अपने दिल में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के प्रति तीव्र मोहब्बत होने तक का सफ़र वाकई काबिले-ग़ौर है। मुझे पहले ख़िलाफ़त की कद्र नहीं थी, लेकिन अब मुझे ख़िलाफ़त से बहुत मोहब्बत है। कहते हैं कि बेलिज़ में तो ज़रा से चंद लोग इकट्ठा हों तो झगड़ा हो जाता है। कहते हैं कि हमारे शहर की आबादी पचास हज़ार है और यहाँ भी इसके क़रीब लोग शामिल थे, लेकिन बिल्कुल शांति थी। कहते हैं कि बहुत व्यवस्थित इंतज़ाम। बहुत बारीकी से सोचा गया हर इंतज़ाम। बच्चों का पानी पिलाना, युवाओं का पार्किंग में गाड़ियों की लाइनें लगवाना, खाने का वितरण और सफ़ाई, हर व्यक्ति पूरी लगन और मोहब्बत से काम कर रहा है। यह सब देखना बहुत प्रभावशाली है। उच्च पेशेवर पृष्ठभूमि वाले लोग भी बिना किसी अहंकार के सेवा में लगे हुए हैं, केवल इसलिए कि वे सेवा करना चाहते हैं, अल्लाह की रज़ा हासिल करना चाहते हैं। और फिर कहते हैं कि युवाओं से बात करके यह बात भी सामने आई कि सब शिक्षा पर बहुत ध्यान दे रहे हैं।

चेक गणराज्य से एक वरिष्ठ प्रोफेसर, पेट्र फेलिकन (Petr Pelikan) जलसे में शामिल हुए थे। वह चेक गणराज्य में इस्लाम और न्यायशास्त्र के विशेषज्ञ हैं। वह सरकारी स्तर पर विभिन्न पदों पर आसीन हैं। वह विभिन्न विषयों पर पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में लिखते हैं और मूल रूप से वह सुन्नी मुसलमान हैं। कहते हैं कि इस बार मेरा दूसरा जलसा है। पहले मैं जर्मनी के जलसे में शामिल हुआ था और यहाँ भी मैंने वही उच्च स्तर देखा जो पहले मैंने देखा था, लेकिन यहाँ एक अतिरिक्त चीज़ थी जो ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की उपस्थिति थी, जिसका मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। कहते हैं कि मैंने दुनिया में कई सभाएं और प्रदर्शनियाँ देखी हैं, लेकिन इस स्तर की एकजुटता, प्रेम और शांतिपूर्ण वातावरण पहली बार देखा है। यहाँ हर व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान और सेवा का जज़्बा स्पष्ट था, जो अहमदिया जमाअत की उच्च तर्बियत का प्रमाण है। कहते हैं कि पहला भाषण, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का, वह भी मेरे लिए एक अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक अनुभव था। उन्होंने बड़ी यथार्थवादी ढंग से सारी बातें कीं और मेहमानों के बारे में बताया कि किस तरह उनका ख़्याल रखना है। उनका दिल शीशे की तरह होता है, उनका ख़्याल रखना है और फिर लोगों ने इस ओर ध्यान भी दिया और वाकई ख़्याल रखा। फिर कहते हैं कि सुरक्षा के इंतज़ाम भी अच्छे थे और हर जगह बड़े व्यवस्थित तरीके से काम हुए और यह आश्चर्यजनक था कि बिना किसी बाधा के यह सारा काम सुचारू रूप से चल रहा था। कहते हैं कि मेरे ख़्याल में दूसरों को भी यहाँ ज़रूर आना चाहिए ताकि वे खुद आकर इस भाईचारे के माहौल को अपनी आँखों से देख सकें और महसूस कर सकें कि किस तरह प्रेम, भाईचारा और शांति यहाँ की फ़िज़ा में रची-बसी है। यह एक ऐसा अनुभव है जो हर व्यक्ति को कम से कम एक बार ज़रूर प्राप्त करना चाहिए। कहते हैं कि यह अनुभव मुझे इस बात पर क़ायल करता है कि अहमदिया जमाअत का भविष्य उज्ज्वल है। इस जलसे ने मेरे दिल में इस्लाम के बारे में और गहराई और व्यापकता पैदा की है। हालाँकि मैं स्वयं सुन्नी मुसलमान हूँ, मगर मैंने कभी अह्मदी भाइयों को इस्लाम के दायरे से बाहर नहीं समझा। यहाँ मुझे विभिन्न भाषाओं में अह्मदी विद्वानों और भाइयों से सीधे बातचीत का अवसर मिला, जिन्होंने अत्यंत निष्ठा से मुझे जमाअत के विश्वासों और सिद्धांतों से अवगत कराया। यह मेरे लिए न केवल एक मुसलमान के तौर पर, बल्कि चेक गणराज्य में प्रोफेसर होने की हैसियत से भी बहुत महत्वपूर्ण है। कहते हैं कि स्वयंसेवकों से भी मुझे बात करने का अवसर मिला, जिनमें बड़ी उम्र के भी थे, जवान भी थे और मैंने उन सब से पूछा कि क्यों यह सेवा कर रहे हैं? तो हर एक का जवाब कमोबेश एक ही था कि हम यह सेवा केवल अल्लाह त'आला की रज़ा, मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों के लिए और अपनी आध्यात्मिक उन्नति और सुधार के लिए करते हैं। एक सेवक ने बताया कि वह पिछले पंद्रह सालों से इस विभाग में सेवा कर रहा है और जब से वह बच्चा था, तब से हर साल जलसे के दिनों को हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों की सेवा के लिए समर्पित करता आया है। यह सभी सेवाएँ वे बिना किसी सांसारिक मुआवज़े या बदले के करते हैं। मेरे नज़दीक यही वह उच्च आध्यात्मिक प्रशिक्षण है जो ख़िलाफ़त ने उनके दिलों में जमा दिया है और यही कारण है कि हर कार्यकर्ता निष्ठा, परोपकार और प्रेम के जज़्बे से ओत-प्रोत होकर अपनी सेवा अंजाम दे रहा है। मेरे दिल में इन निष्ठावान स्वयंसेवकों के लिए बेहद सम्मान और श्रद्धा है जो हर मौसम, हर परिस्थिति में निस्वार्थ भाव से अपनी ऊर्जाएँ प्रस्तुत करने के लिए तैयार रहते हैं और कहते हैं कि एक प्रोफेसर के नाते मेरे लिए यह बात भी सुखद और आश्चर्यजनक थी कि जमाअत-अहमदिया शिक्षा और अध्यापन को कितना महत्व देती है। बुकस्टॉल्स पर मैंने कई घंटे बिताए। विभिन्न पुस्तकों का बारीकी से अध्ययन किया। उनके मानक, सामग्री और साहित्यिक शैली को अत्यंत उत्कृष्ट और प्रशंसनीय पाया। यह एक आश्चर्यजनक और प्रभावशाली साहित्यिक सेवा है और इसी तरह की उनकी भावनाएँ और विचार हैं।

फ्रेंच गयाना से नव-मुस्लिमा अमीना माला सिंह (Amina Mala Singh) कहती हैं कि जलसे के दौरान सबसे अधिक दिल को छू लेने वाली बात लोगों का व्यवहार और उनकी मेहमाननवाजी थी। यदि आप थके हुए हों और बैठने की जगह की आवश्यकता हो, तो वे लोग जो पहले से बैठे थे, तुरंत उठकर अपनी जगह दे देते थे। एक अजीब सा सुकून और स्वतंत्रता का एहसास था। एक आध्यात्मिक वातावरण जो शब्दों से परे है, और सबसे अधिक प्रभावशाली क्षण वह था जब मैंने ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को देखा और मुलाकात की। बेसाख्ता मेरी आँखों से आँसू जारी हो गए। शुरुआत में ही ख़िलाफ़त से संबंध और वफ़ादारी का इज़हार, ये सब बातें ख़ुदा त'आला की ओर से ही पैदा की हुई हैं, कोई इंसान पैदा नहीं कर सकता।

बुल्गारिया से एक नव-मुस्लिमा इवेलिना (Ivelina) भी हैं। कहती हैं कि मैं अपने घर में अकेली अहमदिया हूँ। मैंने अहमदीयता को बहुत गहराई से पढ़ा और तीन साल की खोज के बाद स्वीकार किया। यह मेरा यूके का पहला जलसा है। यह एक अत्यंत आध्यात्मिक जलसा था। हालाँकि मैं लंबे समय से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी कि यूके का जलसा स्वयं देखूं, जो यहाँ का सबसे बड़ा जलसा है, क्योंकि ख़लीफ़ा-ए-मसीह इसमें शामिल होते हैं और भाषण भी देते हैं। कहती हैं कि इन बरकत वाले दिनों के दौरान मैंने एक बेमिसाल आध्यात्मिक वातावरण महसूस किया और उसका हिस्सा बनने की तौफ़ीक़ पाई। अल्लाह के फ़िदाइयों के बीच रहकर मेरा अपना संबंध भी अल्लाह त'आला से और अधिक मज़बूत हुआ। भाईचारे का जज़्बा और उच्च आचरण और आध्यात्मिक मानक

जो हर पहलू में नज़र आया, उसने मेरे दिल पर गहरा असर छोड़ा। मैं दिल की गहराइयों से उन सभी कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों और आयोजकों का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ जिन्होंने इस शानदार जलसे के आयोजन के लिए अथक मेहनत की। मेरा अनुभव अत्यंत शानदार रहा और यह बहुत प्रभावशाली था कि किस कदर बारीकी से मेहमानों की सुविधा और आराम का ख़्याल रखा गया। कहती हैं कि इस बरकत वाले जलसे के अंत में, मैं घर वापस ऐसे ईमान के साथ लौटूंगी जो पहले से ज़्यादा मज़बूत है और ऐसे ज्ञान के साथ जो ज़्यादा सही है और इस विश्वास के साथ कि मेरा संबंध अब सच्चे इस्लाम से है। मेरे लिए सबसे अधिक प्रभावोत्पादक क्षण वह था जब ख़लीफ़ा-ए-मसीह का हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) की आमद के बारे में भाषण हुआ, जिसका वादा हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया था। हालाँकि मैं इस विषय पर पहले भी विचार कर चुकी थी, लेकिन ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के शब्दों ने मुझे नई अंतर्दृष्टि दी है और मुझे नए कोण दिखाए हैं जो पहले मेरे सामने नहीं आए थे। और कहती हैं कि यह भाषण उन आरोपों और शंकाओं का भरपूर और तर्कपूर्ण उत्तर था जो कुछ विरोधियों की ओर से ख़ातिम-उन-नबीय्यीन के बाद किसी के आने की संभावना पर किए जाते हैं। यह तक़रीर मेरी समझ को विस्तृत करने वाली, मेरी अंतर्दृष्टि को गहरा करने वाली और मेरे दृष्टिकोण को और अधिक व्यापक बनाने वाली बनी है, और फिर कहती हैं कि एक और तक़रीर जिसने मेरे दिल पर गहरा असर छोड़ा है, वह है क़ुरआन मजीद के ईश्वर की ओर से होने के प्रमाण। यह सुनकर कि वर्तमान दौर के आपत्तियों को किस कदर तार्किक, तर्कपूर्ण और स्पष्ट ढंग से रद्द किया गया है, मुझे न केवल दिली सुकून मिला, बल्कि एक नया विश्वास भी हासिल हुआ कि जब भी किसी महफ़िल में क़ुरआन करीम की सच्चाई पर हमला किया जाए, तो मैं भी अब इन आरोपों का बचाव कर सकूँगी। तो यह एक नया जज़्बा है जो इन लोगों में पैदा होता है।

ब्राज़ील से एक मेहमान इगोर लुकास (Igor Lucas) एक पत्रकार हैं और प्रांतीय संसद के सदस्य के सचिव हैं। कहते हैं कि जलसे के कार्यक्रमों में समय की पाबंदी सराहनीय थी। यह बहुत अच्छी बात है। जमाअत-ए-अहमदिया के व्यक्तियों की मेहमाननवाज़ी और दिल का ख़लूस अत्यंत प्रभावशाली है। खाने से लेकर बाथरूम के इस्तेमाल तक, आने-जाने से लेकर जलसागाह के प्रवेश और निकास द्वारों तक, मेहमानों को हमेशा प्राथमिकता दी जाती थी। यह माहौल इंसान को एकजुटता और परोपकार का पाठ सिखाता है। और फिर यह कहते हैं कि इस बात ने भी मुझे प्रभावित किया कि खाने के अपव्यय से बचने की गंभीरता से कोशिश की जाती है, लेकिन भोजन बहुत उदारता से हर व्यक्ति तक पहुँचाया जाता है।

इंडोनेशिया के एक मेहमान, गोमार गुलतुम (Gomar Gultom) हैं। वह पादरी हैं। वह 'कमुनियन ऑफ़ चर्चिज़ इंडोनेशिया' के अध्यक्ष रह चुके हैं। कहते हैं कि मैं अहमदीयता को जानता था, लेकिन इस जलसे के माध्यम से मैंने बेहतर तरीक़े से समझा कि अहमदीयता एक आध्यात्मिक तहरीक है जो क़ादियान के एक छोटे से गाँव से शुरू हुई थी और अब यह एक वैश्विक आध्यात्मिक तहरीक बन चुकी है। मैंने देखा कि कैसे विभिन्न देशों से अह्मदी कार्यकर्ता अल्लाह से संबंध बनाने के लिए एक ही जज़्बे के साथ हाज़िर हुए। कहते हैं कि प्रभावशाली बात यह थी कि इंसान के अल्लाह त'आला से संबंध को गहरा बनाने पर ज़ोर दिया गया है। यह एक ऐसी बात है जिसे बहुत से लोग नज़रअंदाज़ कर देते हैं, लेकिन यहाँ यह मौलिक चीज़ें बन जाती हैं। और इसी तरह के उनके तासुरात हैं।

आइसलैंड से एक मेहमान, नैंडकिसोर (Nandkisore) साहब, यूनिवर्सल पीस फेडरेशन के अध्यक्ष हैं। कहते हैं कि मत्ती 7:16 में लिखा है कि तुम उनके फलों से उन्हें पहचान लोगे। ये शब्द मेरे लिए वार्षिक जलसा 2025 के दौरान अत्यंत प्रभावशाली और जीवित हक़ीक़त बनकर सामने आए। जलसे के प्रतिभागियों के चमकते और ख़ुशी से भरे चेहरों को देखकर मेरे दिल पर गहरा असर हुआ। मेरी नज़र में यह इस बात का स्पष्ट संकेत था कि प्रभु इन बंदों की एकता देखकर ख़ुश है जो उसकी रज़ा की तलाश में जमा हुए हैं। ह्यूमैनिटी फर्स्ट के एक कार्यकर्ता ने, जो अफ्रीका में मानवीय सेवा कर रहे थे, बताया कि यह सेवा न केवल दूसरों के लिए फ़ायदेमंद है, बल्कि यह उसे अल्लाह के क़रीब भी ले जाती है। यह ईमान को व्यावहारिक रूप से प्रकट करने की एक शक्तिशाली याददहानी है। और इसी तरह के उनके बहुत से तासुरात हैं।

बुल्गारिया से एक नव-मुस्लिमा इवेलिना (Ivelina) भी हैं। कहती हैं कि मैं अपने घर में अकेली अहमदिया हूँ। मैंने अहमदीयता को बहुत गहराई से पढ़ा और तीन साल की खोज के बाद स्वीकार किया। यह मेरा यूके का पहला जलसा है। यह एक अत्यंत आध्यात्मिक जलसा था। हालाँकि मैं लंबे समय से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी कि यूके का जलसा स्वयं देखूं, जो यहाँ का सबसे बड़ा जलसा है, क्योंकि ख़लीफ़ा-ए-मसीह इसमें शामिल होते हैं और भाषण भी देते हैं। कहती हैं कि इन बरकत वाले दिनों के दौरान मैंने एक बेमिसाल आध्यात्मिक वातावरण महसूस किया और उसका हिस्सा बनने की तौफ़ीक़ पाई। अल्लाह के फ़िदाइयों के बीच रहकर मेरा अपना संबंध भी अल्लाह त'आला से और अधिक मज़बूत हुआ। भाईचारे का जज़्बा और उच्च आचरण और आध्यात्मिक मानक

जो हर पहलू में नज़र आया, उसने मेरे दिल पर गहरा असर छोड़ा। मैं दिल की गहराइयों से उन सभी कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों और आयोजकों का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ जिन्होंने इस शानदार जलसे के आयोजन के लिए अथक मेहनत की। मेरा अनुभव अत्यंत शानदार रहा और यह बहुत प्रभावशाली था कि किस कदर बारीकी से मेहमानों की सुविधा और आराम का ख़्याल रखा गया। कहती हैं कि इस बरकत वाले जलसे के अंत में, मैं घर वापस ऐसे ईमान के साथ लौटूंगी जो पहले से ज़्यादा मज़बूत है और ऐसे ज्ञान के साथ जो ज़्यादा सही है और इस विश्वास के साथ कि मेरा संबंध अब सच्चे इस्लाम से है। मेरे लिए सबसे अधिक प्रभावोत्पादक क्षण वह था जब ख़लीफ़ा-ए-मसीह का हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) की आमद के बारे में भाषण हुआ, जिसका वादा हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया था। हालाँकि मैं इस विषय पर पहले भी विचार कर चुकी थी, लेकिन ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के शब्दों ने मुझे नई अंतर्दृष्टि दी है और मुझे नए कोण दिखाए हैं जो पहले मेरे सामने नहीं आए थे। और कहती हैं कि यह भाषण उन आरोपों और शंकाओं का भरपूर और तर्कपूर्ण उत्तर था जो कुछ विरोधियों की ओर से ख़ातिम-उन-नबीय्यीन के बाद किसी के आने की संभावना पर किए जाते हैं। यह तक़रीर मेरी समझ को विस्तृत करने वाली, मेरी अंतर्दृष्टि को गहरा करने वाली और मेरे दृष्टिकोण को और अधिक व्यापक बनाने वाली बनी है, और फिर कहती हैं कि एक और तक़रीर जिसने मेरे दिल पर गहरा असर छोड़ा है, वह है क़ुरआन मजीद के ईश्वर की ओर से होने के प्रमाण। यह सुनकर कि वर्तमान दौर के आपत्तियों को किस कदर तार्किक, तर्कपूर्ण और स्पष्ट ढंग से रद्द किया गया है, मुझे न केवल दिली सुकून मिला, बल्कि एक नया विश्वास भी हासिल हुआ कि जब भी किसी महफ़िल में क़ुरआन करीम की सच्चाई पर हमला किया जाए, तो मैं भी अब इन आरोपों का बचाव कर सकूँगी। तो यह एक नया जज़्बा है जो इन लोगों में पैदा होता है।

ब्राज़ील से एक मेहमान इगोर लुकास (Igor Lucas) एक पत्रकार हैं और प्रांतीय संसद के सदस्य के सचिव हैं। कहते हैं कि जलसे के कार्यक्रमों में समय की पाबंदी सराहनीय थी। यह बहुत अच्छी बात है। जमाअत-ए-अहमदिया के व्यक्तियों की मेहमाननवाज़ी और दिल का ख़लूस अत्यंत प्रभावशाली है। खाने से लेकर बाथरूम के इस्तेमाल तक, आने-जाने से लेकर जलसागाह के प्रवेश और निकास द्वारों तक, मेहमानों को हमेशा प्राथमिकता दी जाती थी। यह माहौल इंसान को एकजुटता और परोपकार का पाठ सिखाता है। और फिर यह कहते हैं कि इस बात ने भी मुझे प्रभावित किया कि खाने के अपव्यय से बचने की गंभीरता से कोशिश की जाती है, लेकिन भोजन बहुत उदारता से हर व्यक्ति तक पहुँचाया जाता है।

इंडोनेशिया के एक मेहमान, गोमार गुलतुम (Gomar Gultom) हैं। वह पादरी हैं। वह 'कमुनियन ऑफ़ चर्चिज़ इंडोनेशिया' के अध्यक्ष रह चुके हैं। कहते हैं कि मैं अहमदीयता को जानता था, लेकिन इस जलसे के माध्यम से मैंने बेहतर तरीक़े से समझा कि अहमदीयता एक आध्यात्मिक तहरीक है जो क़ादियान के एक छोटे से गाँव से शुरू हुई थी और अब यह एक वैश्विक आध्यात्मिक तहरीक बन चुकी है। मैंने देखा कि कैसे विभिन्न देशों से अह्मदी कार्यकर्ता अल्लाह से संबंध बनाने के लिए एक ही जज़्बे के साथ हाज़िर हुए। कहते हैं कि प्रभावशाली बात यह थी कि इंसान के अल्लाह त'आला से संबंध को गहरा बनाने पर ज़ोर दिया गया है। यह एक ऐसी बात है जिसे बहुत से लोग नज़रअंदाज़ कर देते हैं, लेकिन यहाँ यह मौलिक चीज़ें बन जाती हैं। और इसी तरह के उनके तासुरात हैं।

आइसलैंड से एक मेहमान, नैंडकिसोर (Nandkisore) साहब, यूनिवर्सल पीस फेडरेशन के अध्यक्ष हैं। कहते हैं कि मत्ती 7:16 में लिखा है कि तुम उनके फलों से उन्हें पहचान लोगे। ये शब्द मेरे लिए वार्षिक जलसा 2025 के दौरान अत्यंत प्रभावशाली और जीवित हक़ीक़त बनकर सामने आए। जलसे

के प्रतिभागियों के चमकते और ख़ुशी से भरे चेहरों को देखकर मेरे दिल पर गहरा असर हुआ। मेरी नज़र में यह इस बात का स्पष्ट संकेत था कि प्रभु इन बंदों की एकता देखकर ख़ुश है जो उसकी रज़ा की तलाश में जमा हुए हैं। ह्यूमैनिटी फर्स्ट के एक कार्यकर्ता ने, जो अफ्रीका में मानवीय सेवा कर रहे थे, बताया कि यह सेवा न केवल दूसरों के लिए फ़ायदेमंद है, बल्कि यह उसे अल्लाह के क़रीब भी ले जाती है। यह ईमान को व्यावहारिक रूप से प्रकट करने की एक शक्तिशाली याददहानी है। और इसी तरह के उनके बहुत से तासुरात हैं।

कज़ाख़स्तान से एक गैर-अहमदी मेहमान सॉली (Sauley) साहिबा कहती हैं कि मेरा संबंध कज़ाख़स्तान से है। मुझे पहली बार जलसे में शामिल होने का अवसर मिला। मुझे बहुत सी दुनियावी सभाओं और सम्मेलनों में भाग लेने का अवसर मिला है, लेकिन यहाँ उपस्थित लोगों की संख्या ने मुझे बहुत प्रभावित किया। फिर यह भी कि इतने सारे लोग जो विभिन्न देशों से सिर्फ़ भलाई के लिए आए थे। उनका उद्देश्य केवल भलाई के शब्द सुनना था और यह कि दुनिया में लोग शांति और सद्भाव के साथ कैसे रहें, साथ ही यह कि नफ़रत के जज़्बात को दुनिया से कैसे दूर किया जाए और कैसे दुनिया में प्यार-मोहब्बत का बोलबाला हो। फिर यह कहती हैं कि ख़लीफ़ा-ए-मसीह के शब्द महिलाओं के स्थान को ऊँचा उठाने के संदर्भ में अत्यंत शानदार थे। इस जलसे का नारा "सबके लिए मोहब्बत, किसी से नफ़रत नहीं" और लोगों का एकीकरण इस बात की ओर दिशा-निर्देश कर रहा था कि हम एक होकर रहें। मैंने इस तरह के शब्द कभी नहीं सुने और यह सब कुछ आत्मा में समाता जा रहा था। यह महिला गैर-अहमदी थीं। कहती हैं कि मेरी बॉस एक अहमदिया थीं। मैं पहले तो उनके ख़िलाफ़ थी, लेकिन अब मैं यह सारा माहौल देखकर कम से कम विरोध छोड़ दूँगी, बल्कि उनका समर्थन करूँगी।

ऑस्ट्रिया से मुश्ताक़ ज़ाहिर नेज़ा (Moshtagh Zaherinezah) साहब आए थे। वह ऑस्ट्रिया में इस्लाम के शिक्षक हैं और कहते हैं कि वार्षिक जलसे में मैंने हर तरफ़ मोमिनों को देखा। हर कोई बहुत दोस्ताना था और इस्लाम की सेवा के लिए खास जज़्बा रखता था और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के शब्दों से मैं बहुत प्रभावित हुआ। कहते हैं कि इस समय मेनस्ट्रीम मुसलमानों में जो उलेमा हैं, वे सिर्फ़ दाढ़ी को लंबा करना और ख़ास लिबास पहनना ही सब कुछ समझते हैं और नाम के मुसलमान हैं, लेकिन जमाअत-ए-अहमदिया एकमात्र जमाअत है जो सच्चे दिल से इस्लाम की सेवा कर रही है और कहते हैं कि शायद दो सौ सालों के समय में यह दुनिया पर हावी हो जाएगी। कहते हैं कि मैं एक सुन्नी मुसलमान हूँ, लेकिन विश्वास रखता हूँ कि जमाअत-ए-अहमदिया के संस्थापक वास्तव में एक पवित्र हस्ती थे और इस समय मुझे लगता है कि वह वक़्त के मुजद्दिद थे। यहाँ तक तो उन्होंने माना है। कहते हैं कि लेकिन अभी मैं यह सोच रहा हूँ। इस पर विचार कर रहा हूँ। मुझे मसीह-ए-मौऊद और महदी-ए-मौऊद मानने पर अभी ज़रा थोड़ा-थोड़ा संकोच है, हालाँकि मैं रिसर्च कर रहा हूँ। बहरहाल, उनकी एक सोच है। उस दिशा में उनका झुकाव आया है। कम से कम वह नेक-फ़ितरत हैं। उन्होंने यह तो कह दिया कि मैं सोच रहा हूँ और धृष्टता नहीं दिखाई कि मैं सोचूंगा भी नहीं।

बुल्गारिया से एक नव-मुस्लिमा, इलिस्ता रूडी डेमांज (Elista Rudy Demange) साहिबा हैं। उन्होंने ईसाई धर्म से इस्लाम स्वीकार किया है। कहती हैं कि जलसे में शामिल होने से पहले मेरे दिल में यह ख़तरा था कि शायद मैं खुद को हर समय इस माहौल का हिस्सा महसूस न कर सकूँ, क्योंकि मैं नई हूँ और मेरा कल्चर और भाषा अलग है, लेकिन जो एकता और प्रेम मैंने यहाँ देखा, वह दुनिया में कहीं और नहीं देखा। मैंने दुनिया के हर कोने से आए लोगों से मुलाक़ात की, मगर वे सब एक ही परिवार का हिस्सा महसूस होते थे। एक-दूसरे को न जानते हुए भी मुस्कुराकर एक-दूसरे से मिलते थे। कभी-कभी इंसान के ईमान और तक़वा पर शक या ग़फ़लत की धूल जम जाती है। वार्षिक जलसे में शामिल होना ऐसा है जैसे दिल और रूह को फिर से पवित्रता मिल जाए और इंसान एक नई आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत करे। यह अनुभव रूह को ताज़गी बख़्शता है और दिल को इत्मीनान और सुकून से भर देता है।

जॉर्जिया से रोलैंड शावाद्ज़े (Rolannd Shavadze) कहते हैं कि जलसे का शांतिपूर्ण वातावरण, भाषण और ख़लीफ़ा के ख़िताब आध्यात्मिकता में आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान देते हैं और यह जुमे का जो ख़िताब था, मुझे बहुत अच्छा लगा जिसमें मेहमाननवाज़ी के बारे में इस्लामी शिक्षाओं के हवाले से बताया गया और इसी तरह ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का महिलाओं पर ख़िताब जो था, यह भी मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझ पर इसका बड़ा असर हुआ और कहते हैं कि मैं एक जॉर्जियाई मुसलमान हूँ और यूनिवर्सिटी में लेक्चरर भी हूँ। दो साल पहले मुझे जॉर्जिया के बेस्ट टीचर का अवॉर्ड मिला है और मेरी फ़ील्ड भी शिक्षा की है और मुझे ख़ास तौर पर अच्छा लगा कि किस तरह आपकी जमाअत महिलाओं और पुरुषों की शिक्षा के हवाले से हौसला-अफ़ज़ाई करती है। कहते हैं क्योंकि मुझे इस साल इस्लामी सिद्धांतों के दर्शन का अंग्रेज़ी से जॉर्जियाई भाषा में अनुवाद करने की तौफ़ीक़ मिली है। अनुवाद करते समय मुझे बहुत आनंद आया और ख़लीफ़ा-ए-मसीह ने इतवार के रोज़ अंतिम ख़िताब में इस बात का ज़िक्र किया कि दूसरे मुसलमान जो आपको नफ़रत की निगाह से देखते हैं, उनके झूठे आरोप का जवाब इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम के साथ दिया गया है, यह मुझे बहुत अच्छा लगा और फिर बैअत का नज़ारा, उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। कहते हैं आजकल इस्लाम के बारे में नकारात्मक तस्वीर पेश की जाती है। जिसने भी इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम देखनी है, तो वह जलसे में आए और मोहब्बत, भाईचारे और अमन की फ़िज़ा को अपनी आँखों से देखकर अनुभव करे।

इसी तरह जेसिका गार्सिया कोहल (Jessica Garcia Kohl Liccardo), कांग्रेशमैन सैम रिकार्डो (Sam Liccardo) की पत्नी हैं। यह कहती हैं कि मैं घरेलू हिंसा (Domestic violence) के ख़िलाफ़ एक विभाग में काम करती हूँ और यह जानकर मैं हैरान रह गई कि ख़लीफ़ा ने न केवल महिलाओं के ख़िलाफ़ शारीरिक हिंसा का ज़िक्र किया, बल्कि महिलाओं के ख़िलाफ़ भावनात्मक हिंसा का भी अपने भाषण में ज़िक्र किया। एक सवाल का जवाब उनके लिए अधूरा था। कहती हैं कि मुझे वह नहीं मिला था कि अगर किसी महिला के साथ कुछ हो जाए, तो वह कहाँ मदद हासिल कर सकती है? फिर कहती हैं कि मुझसे उन्होंने सवाल भी किया था। मैंने उन्हें बताया कि वह जमाअत का सिस्टम है। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के पास भी आती हैं। जमाअत के सिस्टम के पास आती हैं। फिर जमाअत उनकी मदद भी करती है और दूसरे साधन भी अपना सकती है। बहरहाल, कहती हैं कि ये सब बातें सुनकर मुझे तसल्ली हुई और इस बात से भी तसल्ली हुई कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का जमाअत के लोगों के साथ निजी संबंध है। कुछ लोग कहते हैं कि कुछ बातें आपने कीं, जिन पर ऐतराज़ उठते हैं, ख़ास तौर पर मारने का जहाँ सवाल था, तो उसकी एक विस्तृत व्याख्या है और वह एक अलग विषय है और शर्तें भी पूरी नहीं होतीं और अगर उन शर्तों को पूरा किया जाए, तो जहाँ तक महिला को मारने का सवाल है, तो उन शर्तों के पूरा होने तक तो वैसे ही हालात ऐसे हो जाते हैं कि मारने की नौबत ही नहीं आती। इसलिए यह एक बहुत ही दूर का संभावना है, जिसकी बहरहाल इस्लाम ने तालीम दी है।

एक अरबी महिला, स्वीडन से यहाँ आई हैं। कहती हैं कि वार्षिक जलसा एक बड़े घर की तरह है जो पूरी फ़ैमिली को अपने अंदर समेट लेता है। स्वीडन में बहुत ही सीमित अरबी अहमदिया हैं, जबकि वार्षिक जलसे पर जब 'अरब टेंट' का नाम सुनते हैं, तो एक अजीब सा सुकून और अपनापन महसूस होता है और फिर अन्य अरबी बहनों और भाइयों से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई और उसने मुझ पर बड़ा असर डाला। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से मुलाक़ात हुई, उसका भी अच्छा असर हुआ।

अल्लाह त'आला सभी मेहमानों के, जो शामिल हुए हैं, सीने और खोले और वे अहमदीयता और सच्चे इस्लाम को समझने वाले और ज़माने के इमाम को मानने वाले भी बनें। नव-मुस्लिमों को भी ईमान और निष्ठा में बढ़ाता रहे। इसी तरह हर अहमदिया को भी तौफ़ीक़ दे कि जलसे पर जो उन्होंने कार्यक्रम देखे, सुने, उस पर अमल करने वाले हों। उसे अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाने वाले हों। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले हों और यह जज़्बा हमेशा क़ायम रहे। जलसे की बरकतों से हर अहमदिया हमेशा हिस्सा लेता रहे। और अपने नफ़्स और अपने माहौल की इस्लाह के लिए भी भरपूर कोशिश करने वाले हों।

इस बारे में प्रेस वालों की रिपोर्ट भी संक्षिप्त रूप से दे दूं। इटली की प्रेस कवरेज में रिपोर्टें प्रकाशित हुई हैं और कहते हैं कि इस वार्षिक जलसे की कुछ महत्वपूर्ण बैठकों को यूरोकम्युनिकेज़ियोन (Eurocomunicazione) न्यूज़ एजेंसी, जो यूरोपीय संसद की आधिकारिक प्रेस एजेंसी है, ने सीधे प्रसारित किया है और विभिन्न साक्षात्कारों को प्रसारित किया है और प्रकाशित किया है। अब

तक साठ अख़बारों और अन्य समाचार एजेंसियों में जलसे के बारे में ख़बर और रिपोर्टें प्रकाशित हुई हैं और इसमें ऑनलाइन इन्फ़्लुएंसर्स ने एक संदेश भी मेरा दिया है। इटली से आने वाले दो पत्रकारों, जिनके सोशल मीडिया पर लगभग आधे मिलियन फॉलोअर्स हैं, ने जमाअत की सकारात्मक अंदाज़ में रिपोर्ट दी है।

जमाअती प्रेस एंड मीडिया सेक्शन ने जो काम किया है, उसके तहत भी ऑनलाइन वेबसाइट पर लगभग पचास मिलियन लोगों ने देखा। उनचास के करीब वेबसाइटें हैं। प्रिंट मीडिया, यानी अखबारों में सत्रह आर्टिकल प्रकाशित हुए। बीस मिलियन लोगों ने देखा-पढ़ा। रेडियो पर पच्चीस कार्यक्रम हुए और इन पच्चीस कार्यक्रमों में जलसे को कवर (cover) किया और सुनने वालों की संख्या बीस मिलियन थी। टीवी पर जलसे को कवरेज दी गई। टीवी चैनलों के करीब पांच मिलियन दर्शक हैं। इसी तरह मीडिया आउटलेट्स, पत्रकार और पब्लिक फिगर्स ने सोशल मीडिया पर इस सिलसिले में बहुत कुछ लिखा और सोशल मीडिया के माध्यम से चौदह मिलियन तक यह खबर पहुंची। अल्लाह त'आला के फ़ज़्ल से, सबको मिला लिया जाए तो सौ मिलियन के करीब लोगों तक यह खबर पहुंची। प्रसिद्ध मीडिया आउटलेट्स में आईटीवी है, एलबीसी है, द टाइम्स है, द गार्जियन, टेलीग्राफ, डेली मेल, इंडिपेंडेंट, बीबीसी, अल-अरबीया, द्वेन्टी-वन, डेली एक्सप्रेस, लंदन इवनिंग स्टैंडर्ड, द न्यू अरब शामिल हैं और इस तरह बहुत सारे दूसरे मीडिया भी हैं जिन तक खबर पहुंची है। एमटीए अफ्रीका के माध्यम से विभिन्न चैनलों पर मेरे ख़िताब प्रसारित होते रहे और पचास से अधिक लोगों ने वार्षिक जलसे की प्रसारण देखकर बैअत भी की। वार्षिक जलसे की प्रसारण बाईस राष्ट्रीय और क्षेत्रीय टीवी चैनलों पर हुए। तीन सौ चार घंटे का प्रसारण हुआ। पैंसठ मिलियन लोगों तक पैगाम पहुँचा। जलसे से संबंधित रेडियो स्टेशनों पर इक्यानवे विभिन्न रिपोर्ट्स प्रसारित हुईं। सोलह मिलियन तक इस माध्यम से पैगाम पहुँचा और कहते हैं कि विभिन्न दूसरे मीडिया आउटलेट्स के माध्यम से सैंतालीस रिपोर्ट्स प्रसारित हुईं और उन पर एक सौ पचास मिलियन तक पैगाम पहुँचा। एमटीए अफ्रीका के अनुभव यह हैं कि माली के क्षेत्र के एक प्रचारक लिखते हैं कि जलसे के तीसरे दिन एक रूहानी मंज़र देखने में आया। कहते हैं कि सुबह के समय से बारिश हो रही थी और तेज बारिश थी। लगा कि आज कोई मस्जिद नहीं आएगा, लेकिन कहते हैं कि विश्वव्यापी बैअत से कुछ देर पहले कुछ लोग, जिनमें कुछ नव-मुस्लिम भी थे, बारिश में पैदल या साइकिल पर मस्जिद पहुंचे। पूरी तरह भीगे हुए थे। तो प्रचारक ने उनसे कहा कि आप घर बैठकर रेडियो पर भी यह सब सुन सकते थे। एक नव-मुस्लिम ने जवाब दिया, "हम घर बैठकर सुन सकते थे, लेकिन ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते थे और जो खुशी इसमें है, वह किसी और चीज़ में नहीं है और विश्वव्यापी बैअत का नूर और बरकतें मैं खोना नहीं चाहता था, इसलिए बारिश में भीगते हुए भी मैं मस्जिद आ गया हूँ।" अल्लाह त'आला उन सबके ईमान और यक़ीन में इज़ाफ़ा करता चला जाए।

नमाज़ के बाद मैं एक ग़ायब जनाज़ा भी पढ़ाऊँगा। यह श्रीमान अब्दुल करीम जमाल जौदा साहब, ग़ज़ा के हैं। पिछले दिनों इस्राईली सेना की गोलीबारी से वे शहीद हो गए थे।इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम के भाई कहते हैं कि उनकी उम्र पैंतालीस साल थी। विवाहित थे। चार बेटियाँ और दो बेटे हैं। सबसे बड़े बेटे की उम्र सोलह साल है। सबसे छोटे बच्चे की उम्र ढाई साल है। ग़ज़ा पट्टी में जबालिया के इलाके में रहते थे। रूढ़िवादी मुस्लिम परिवार में पले-बढ़े। ग्यारहवीं कक्षा के बाद घर के खर्चों में पिता की मदद के लिए अपने पिता के साथ इमारत के काम में शामिल हो गए। ग्यारह भाई-बहन थे जिनमें यह दूसरे नंबर पर थे और फिर उन्होंने एक धातु की वर्कशॉप भी खोली, जिसे इस्राईली हमले ने ध्वस्त कर दिया। 2013 में उनका अपने भाई के माध्यम से जमाअत से परिचय हुआ था। इस दौरान उन्होंने बैअत भी कर ली। जमाअत के साथ लगातार संपर्क में थे। बहुत सक्रिय और सच्चे इंसान थे। जमाअत से संबंध के कारण ग़ज़ा सुरक्षा संस्थानों ने कई बार उनसे पूछताछ की और कई तरह की जाँचों का उन्हें सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपने विचारों को नहीं बदला। जमाअत से पीछे नहीं हटे। लगातार जमाअत के साथ संपर्क और संबंध जारी रखा। 2025 में क़ब्ज़ाधारी सेना ने उनका घर ध्वस्त कर दिया। उसके बाद किराए के मकान में रहने लगे। फिर ग़ज़ा पट्टी में हालिया अकाल के बाद मरहूम सहायता सामग्री के वितरण के स्थान पर गए। वहाँ सेना ने आटे आदि से युक्त सहायता सामग्री को प्रवेश की अनुमति दी थी, तो भीड़ जमा हो गई। और वे इस्राईल की सेना के कई नज़दीकी क्षेत्रों तक पहुँच गए। निहत्थे लोगों की इस भीड़ पर इस्राईली सेना ने जमकर गोलीबारी की, जिससे कहते हैं मेरे भाई के क़रीब एक व्यक्ति घायल हो गया और मेरे भाई ने उसकी मदद की कोशिश की, तो उसी दौरान एक गोली मेरे भाई के सीने में लगी, जिससे वह मौके पर शहीद हो गए। कहते हैं कि मेरा भाई, जिस घायल व्यक्ति की मदद करते हुए खुद शहीद हो गया, उसने बताया कि मेरे भाई ने शहादत से पहले तीन बार कलिमा पढ़ा और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और नबियों की सुन्नत पर वफ़ात पाई। हमें इस बात की तसल्ली है कि उसकी वफ़ात सैयदना मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दीन पर और इमाम महदी (अलैहिस्सलाम) की बैअत पर क़ायम रहते हुए हुई। वह अल्लाह के फ़ज़्ल से निष्ठावान और सच्चे लोगों में से थे। डॉक्टर हफ़ीज़ साहब, ह्यूमैनिटी फर्स्ट यूके के इंचार्ज हैं। कहते हैं कि नवंबर 2021 में जमाअत की ज़ियारत के सिलसिले में ह्यूमैनिटी फर्स्ट के दौरे के तहत जब ग़ज़ा गया, तो वहाँ अब्दुल करीम साहब से मुलाक़ात हुई। मैंने उन्हें अत्यंत निष्ठावान और फ़िदाई अहमदिया मुसलमान देखा। अल्लाह त'आला उनके दर्जे बुलंद करे और उनके बच्चों को अपनी हिफ़ाज़त में रखे।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल 22 अगस्त 2025, पेज 2-8)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

मगर फिर वह इंसान के मुतअल्लिक़ भी फ़रमाता है कि فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا यानी हम ने उसे समीअ और बसीर बना दिया। अब इसके यह मअनी नहीं कि इंसान खुदा तआला की सिफत समीअ और बसीर में शरीक है बल्कि खुदा तआला ने जब उसे सुनने और देखने की काबिलियत दी तो मजाज़ी रंग में उसे भी समीअ और बसीर कह दिया गया। फिर इंसान के लिए सिर्फ समीअ और बसीर का लफ़्ज़ आता है मगर खुदा तआला के लिए اَلسَّمِيْعُ और اَلْبَصِيْرُ का लफ़्ज़ आता है यानी सुनने और देखने के जितने कमालात हैं वह सब उस में पाए जाते हैं। वरना इंसान की समाअत और बसारत तो इतनी नाक़िस है कि वह दूर की बात सुन ही नहीं सकता और न अपनी पीठ के पीछे पड़ी हुई चीज़ को देख सकता है। इसी तरह बेशक दुनिया में और भी सनाअ और मोज़िद हैं मगर उनकी सनअतें और इजादात बिलकुल बे-हक़ीक़त हैं और फिर जबकि वह खुदा तआला की दी हुई ताक़तों से ही इजादात का सिलसिला क़ायम रखे हुए हैं तो اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ बहरहाल खुदा तआला ही हुआ। कोई इंसान न हुआ।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 139, प्रकाशन क़ादियान 2010)

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमाअत की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाअती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम अमरीका के नुमाइंदे सैम ब्राउनबैक हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात कर रहे हैं।

एम्बेसडर साहब ने बताया कि उन्हें इस बात की बहुत ख़ुशी हुई कि यूएस स्टेट डिपार्टमेंट ने हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को मुकम्मल पोर्ट कर्टसीज़ (port courtesies) फ़राहम कीं

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: मज़हब इंसान के दिल का मामला है। एक इंसान जो मानता है, उसका ताल्लुक़ दिल से है। कोई दूसरा शख़्स किस तरह कह सकता है कि जो तुम्हारा अक़ीदा है, जो दावा है, जो तुम्हारे दिल में है, तुम उस पर ईमान नहीं रखते। कोई भी दूसरा शख़्स यह नहीं कह सकता

हम कहते हैं कि मसीह ज़िंदा आसमान पर नहीं है, बल्कि फ़ौत हो चुका है, आसमान से कोई नहीं आएगा। आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया था कि जब मसीह आएगा, तो उसका ख़िताब नबी होगा। दूसरे मुसलमान कहते हैं कि आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आख़िरी नबी हैं, इसलिए उनके बाद कोई नबी नहीं आ सकता। लेकिन इस बात को मानते हैं कि अगर मसीह (अलैहिस्सलाम) आसमान से आए, तो वह नबी होगा। लेकिन इस आसमान से आने वाले मसीह (अलैहिस्सलाम) के अलावा अगर कोई दूसरा शख़्स दावा करे कि अल्लाह त'आला ने उसे भेजा है और वह नबी है, तो यह ग़लत है। हम कहते हैं कि आप अल्लाह त'आला की सिफ़ात को ख़त्म नहीं कर सकते। वह किसी को नबी के ख़िताब के साथ भेज सकता है। यह बात वाज़ेह है कि नई शरियत नहीं आ सकती। नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की शरियत के ताबिन (अनुयायी) नबी आ सकता है।

31 अक्बतूर 2018, बुधवार

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छह बजे मस्जिद बैत-उर-रहमान में तशरीफ़ लाकर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्ट्स का मुआइना फ़रमाया और हिदायात से नवाज़ा और मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी कार्यों की अंजामदेही में मसरूफ़ियत रही।

प्रोग्राम के मुताबिक़ दस बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए जहाँ इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम अमरीका के नुमाइंदे सैम ब्राउनबैक साहब हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। उनके साथ उनके एक क़रीबी दोस्त रिचर्ड सिम्सन (Richard Simmons) और उनके स्टाफ़ के दो मेम्बरान समीर हुसैन (Sameer Hossein) और हावर्ड च्यांग (Howard Chuang) भी मौजूद थे।

इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम अमरीका के नुमाइंदे सैम ब्राउनबैक हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात कर रहे हैं।

एम्बेसडर साहब ने बताया कि उन्हें इस बात की बहुत ख़ुशी हुई कि यूएस स्टेट डिपार्टमेंट ने हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को मुकम्मल पोर्ट कर्टसीज़ (port courtesies) फ़राहम कीं। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अतिवाद और उग्रवाद के ख़िलाफ़ एक अहम आवाज़ हैं। इसलिए हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को जो भी कर्टसीज़ मिली हैं, वे हुज़ूर-ए-अनवर के मक़ाम के मुवाफ़िक़ हैं।

इसके बाद एम्बेसडर साहब ने पाकिस्तान में अहमदियों की परसेक्यूशन (persecution) के हवाले से बात की।

इस पर हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पाकिस्तान और मलेशिया में तो हमारे ख़िलाफ़ क़ानून बना हुआ है। यहाँ हम अपने मज़हब का इज़हार नहीं कर सकते। इसी तरह बांग्लादेश, इंडोनेशिया और मध्य पूर्व के मुल्कों में भी हमारी मुख़ालफ़त है। मज़हब के इज़हार पर मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: इस्लामी शरियत में इर्दाद (धर्मत्याग) के हवाले से क़ानून नहीं है। जो इस हवाले से कहते हैं कि इसकी यह सज़ा है, वे अपनी तरफ़ से अपनी तशरीहात के मुवाफ़िक़ कहते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अब्दुल शकूर साहब की क़ैद और सज़ा के हवाले से ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि 82 साल उनकी उम्र है और उन्हें इस बात पर गिरफ़्तार किया गया कि उन्होंने अहमदियों की तरबियत के लिए कुछ किताबें अपनी दुकान में रखी हुई थीं। एंटी टेररिस्ट पुलिस ने असलाह से लैस होकर उनकी दुकान पर छापा मारकर दहशतगर्दी के इल्ज़ाम में उन्हें गिरफ़्तार किया और क़ैद की सज़ा दी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: मज़हब इंसान के दिल का मामला है। एक इंसान जो मानता है, उसका ताल्लुक़ दिल से है। कोई दूसरा शख़्स किस तरह कह सकता है कि जो तुम्हारा अक़ीदा है, जो दावा है, जो तुम्हारे दिल में है, तुम उस पर ईमान नहीं रखते। कोई भी दूसरा शख़्स यह नहीं कह सकता।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "पाकिस्तान में मौलवियों की राजनीतिक वैल्यू नहीं है, स्ट्रीट वैल्यू है।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि 1999 में भी दस-ग्यारह दिन के लिए जेल रहा हूँ। उन्हीं क़ानूनों के तहत जो हुकूमत-ए-पाकिस्तान ने ज़ालिमाना तौर पर अहमदियों के ख़िलाफ़ बनाए हैं।

पाकिस्तान में अहमदियों के वोट के हक़ के मुतल्लिक बात हुई। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हमें वोट देने का हक़ नहीं है। हमारे लिए उन्होंने यह शर्त रखी है कि पहले अपने आप को ग़ैर-मुस्लिम कहो और न ही मुसलमानों की तरह अमल करो, तो फिर तुम्हें वोट देने का हक़ देंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि सबसे पहले तो हुकूमत को चाहिए कि वह अहमदियों को वोट का हक़ दे। फ़ौरी तौर पर ब्लेसफेमी लॉ (e.g. ईशनिंदा क़ानून) का ख़ात्मा बेशक न हो, लेकिन अहमदियों को वोट का हक़ फ़ौरी मिलना चाहिए।

एम्बेसडर ब्राउनबैक साहब ने इस्तिफ़सार किया कि दूसरे सुन्नी मुसलमान अहमदियों से इस क़दर नफ़रत क्यों करते हैं? इसके जवाब में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम ईमान रखते हैं कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आख़िरी नबी हैं और क़ुरआन-ए-करीम आख़िरी किताब है। आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने पेशीनगोई फ़रमाई थी कि आख़िरी ज़माने में मसीह व महदी आएगा और इस्लाम का नव-जागरण करेगा। इन सुन्नी मुसलमानों का अक़ीदा है, मसीह ज़िंदा आसमान पर मौजूद है, वह आसमान से आएगा।

हम कहते हैं कि मसीह ज़िंदा आसमान पर नहीं है, बल्कि फ़ौत हो चुका है, आसमान से कोई नहीं आएगा। आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया था कि जब मसीह आएगा, तो उसका ख़िताब नबी होगा। दूसरे मुसलमान कहते हैं कि आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आख़िरी नबी हैं, इसलिए उनके बाद कोई नबी नहीं आ सकता। लेकिन इस बात को मानते हैं कि अगर मसीह (अलैहिस्सलाम) आसमान से आए, तो वह नबी होगा। लेकिन इस आसमान से आने वाले मसीह (अलैहिस्सलाम) के अलावा अगर कोई दूसरा शख़्स दावा करे कि अल्लाह त'आला ने उसे भेजा है और वह नबी है, तो यह ग़लत है। हम कहते हैं कि आप अल्लाह त'आला की सिफ़ात को ख़त्म नहीं कर सकते। वह किसी को नबी के ख़िताब के साथ भेज सकता है। यह बात वाज़ेह है कि नई शरियत नहीं आ सकती। नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की शरियत के ताबिन (अनुयायी) नबी आ सकता है।

बानी-ए-जमाअत अहमदिया ने यही दावा किया कि आप मसीह हैं, महदी हैं और आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की शरियत के ताबिन (अनुयायी) नबी हैं।

आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने यही पेशीनगोई फ़रमाई थी कि आने वाला मसीह आपकी उम्मत में से आएगा और इस्लाम का नव-जागरण करेगा। तलवार के जिहाद की बजाय इस्लामी तालीमात के ज़रीए अमन फैलाएगा।

मसीह मौसवी के क़दमों पर आएगा। पस हमारा यह अक़ीदा है कि नबी आ सकता है, नई शरियत के साथ नहीं, बल्कि आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की शरियत के ताबिन (अनुयायी) आ सकता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: इस वजह से हमको इस्लाम के दायरे से बाहर निकाल दिया है कि तुम नबी के क़ाइल हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: सब मज़ाहब वाले इस इंतज़ार में हैं कि कोई मुसलेह (सुधारक) आएगा। हमारा अक़ीदा है कि तमाम अंबिया (पैगंबरों) की पेशीनगोइयों के मुवाफ़िक़ आख़िरी ज़माने में जिसने आना था, वह आ चुका है और आख़िरी ज़माने में सिर्फ़ एक ही ने आना था और सबको एक हाथ पर मुत्तहिद (एकजुट) करना था।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) ने जब दावा किया, तो बनी-इसराईल ने कहा था कि आपको किस तरह मान लें, जबकि किताबों में लिखा है कि मसीह से पहले एलियाह नबी ने आना है और एलियाह अभी नहीं आया। आपने (अलैहिस्सलाम) जवाब दिया कि जो एलियाह है, वह यहह्या (अलैहिस्सलाम) हैं। मानना चाहते हो तो मानो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: हर मज़हब में कुछ ऐसी चीज़ें और तालीम में कुछ इस्त'आरे (रूपक) होते हैं जिनकी मुख़्तलिफ़ अहवाल से तशरीह की जाती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: हमें बा'इस-ए-इन्सान एक-दूसरे का एहतराम करना चाहिए। सब मज़ाहब में एक बात कॉमन, मुश्तरक है जिस पर हम सब इक्ट्ठे हो सकते हैं। अल्लाह त'आला ने क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया है:

"त'आलौ इला कल तिन सवा'इन बैनना व बैनकुम" (आओ हम उस एक बात पर ही इक्ट्ठे हो जाएं जो हमारे और तुम्हारे दरमियान मुश्तरक है।) और वह ख़ुदा की ज़ात है। हमारा सबका ख़ुदा एक ही है। आओ उसी बात पर इक्ट्ठे हो जाएँ। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर सब ईमान लाते हैं, तो इस बिना पर भी हम सब मिलकर रह सकते हैं। एक होकर रह सकते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: अब हल यही है कि मिलकर बैठें और इंसानियत के लिए सोचें और मसले हल करें।

एम्बेसडर ने अर्ज़ किया कि वह यरूशलेम, सऊदी अरब और वेटिकन सिटी में इब्राहीमी मज़ाहिब का एक सिम्पोज़ियम (सम्मेलन) मुन'अकिद (आयोजित) करना चाहते हैं। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हैफ़ा में हमारी जमाअत आबाद है। वहाँ हमारा मिशन और मस्जिद भी है। हमारे वहाँ सबके साथ बड़े अच्छे ताल्लुक़ात हैं और सब हमारा भी इज़्ज़त-ओ-एहतराम करते हैं। आप वो भी वेन्यू (Venue) के तौर पर रख सकते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: सबसे अहम चीज़ यह है कि अमन, रोआदारी और बर्दाश्त पैदा हो और आज दुनिया को उसी की ज़रूरत है।

एम्बेसडर साहब ने पाकिस्तान जाकर रबवा देखने की ख़्वाहिश का इज़हार किया, जिस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: आप ज़रूर जाएँ और जाकर रबवा देखें।

एम्बेसडर साहब की हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात दस बजकर पैंतीस मिनट तक जारी रही। आख़िर पर मोज़ूफ़ ने हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की स'आदत पाई।

बादअज़ाँ प्रोग्राम के मुवाफ़िक़ यूएस कांग्रेशमैन जेमी रस्किन (Jamie Raskin) ने हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात की स'आदत पाई। इस मुलाक़ात में कांग्रेशमैन के सीनियर काउंसल डेवन ओम्ब्रेस (Devon Ombres) भी मौजूद थे।

कांग्रेस मैन ने बताया कि उन्होंने हाउस ऑफ़ रिप्रेजेंटेटिव के फ़्लोर से "शकूर भाई" के हक़ में आवाज़ उठाई थी और उन्हें "प्रिज़नर्स ऑफ़ कॉन्शेंस" (Prisoner of conscience) कहा।

मोज़ूफ़ ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर-ए-अनवर इस्लाम में बड़ी मज़बूत और मुनज़्ज़म ब्रांच के लीडर हैं। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "असल यह है कि हम इस्लाम की असल हक़ीक़ी तालीम पर अमल-पेरा हों। कोई नई तालीम नहीं है। हम तो क़ुरआन-ए-करीम की तालीमात पर अमल-पेरा हैं।"

अहमदियों की परसेक्यूशन (उत्पीड़न) के हवाले से कांग्रेस मैन ने इस्तिफ़सार किया, जिस पर हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तफ़सील बयान करते हुए फ़रमाया कि ज़ुल्फ़िक़ार अली भुट्टो ने 1974 में हमें ग़ैर-मुस्लिम क़रार दिया था, ताकि दुनिया में उसे मुसलमानों की क़यादत (नेतृत्व) मिल जाए। बाद में 1984 में उस वक़्त के डिक्टेटर ज़िया-उल-हक़ ने हमारे ख़िलाफ़ मज़ीद सख़्त क़ानून बनाए कि अहमदी तबलीग़ नहीं कर सकते, अपने आप को मुसलमान नहीं कह सकते, बच्चों के इस्लामी नाम नहीं रख सकते। मस्जिद को मस्जिद नहीं कह सकते। अगर अस्सलामु अलैकुम कहें तो तीन साल क़ैद की सज़ा होगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अब्दुल शकूर साहब (शकूर भाई) का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि उन्हें महज़ इस वजह से गिरफ़्तार किया गया कि उन्होंने अहमदियों की तरबियत के लिए कुछ किताबें अपनी दुकान में रखी हुई थीं। एंटी-टेररिस्ट पुलिस असलाह से लैस होकर आई और उन पर दहशतगर्द होने का इल्ज़ाम लगाकर गिरफ़्तार कर लिया और आज कल वे जेल में हैं और 82 साल उनकी उम्र है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "मौलवियों की पॉलिटिकल वैल्यू नहीं है, सिर्फ़ स्ट्रीट वैल्यू है।"

कांग्रेस मैन के इस्तिफ़सार पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "मैं पहले पाकिस्तान में था। अब लंदन में मुक़ीम हूँ। पाकिस्तान में इन मुख़ालिफ़ क़ानूनों की वजह से अपने फ़राइज़-ए-मंज़बी अदा नहीं कर सकता।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "मज़हब में ज़बरदस्ती नहीं है। इस्लाम अमन, भाईचारा, रोआदारी और सलामती का मज़हब है। सारी दुनिया से, ख़ास कर अफ़्रीका के मुल्कों से हर साल लाखों लोग अहमदीयता क़बूल कर रहे हैं। बावजूद सख़्त मुख़ालफ़त के, पाकिस्तान से भी अहमदीयत में दाख़िल हो रहे हैं। बाज़ अपने अहमदिया होने को ज़ाहिर नहीं करते, अगर ज़ाहिर करेंगे तो उन क़ानूनों के तहत आ जाएँगे।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हमारा जो जिहाद है, वह यह है कि समाज में अमन-ओ-सलामती और रोआदारी का क़ियाम हो। लोग अपने ख़ालिक़ को पहचानें और उसकी मख़लूक़ के हुक़ूक़ अदा करें और समाज में अदल-ओ-इंसाफ़ का क़ियाम हो। यही असली जिहाद है, जो इस्लाम के बानी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और आप के ग़ुलाम-ए-सादिक़, बानी-ए-जमाअत अहमदिया, हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने बताया है और आज जमाअत

हर जगह इसी जिहाद में मशगूल है।

रियासत और मज़हब के अलग होने के हवाले से ज़िक्र हुआ, तो इस पर कांग्रेस मैन ने कहा कि वह इस हवाले से एक मक़ाला लिखना चाहते हैं, जिसमें वह हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इरशादात को भी कोट (quote) करना चाहते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जमाअत में स्वयंसेवकों के काम के हवाले से तफ़सील बयान फ़रमाई कि किस तरह जमाअत हर साल लाखों डॉलर बचाती है। हमारे जलसों के मौक़े पर हज़ारों लोगों का ख़ाना हमारे वॉलंटियर्स (स्वयंसेवक) बनाते हैं। जहाँ आप लोग मिलियन्स (लाखों) ख़र्च करते हैं, वहाँ हम वह काम चंद हज़ारों में कर लेते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "अहमदियों के ख़िलाफ़ जो हुकूमत ने क़ानून बनाए हुए हैं, उनकी वजह से अहमदियों के ख़िलाफ़ परसेक्यूशन, स्टेट परसेक्यूशन है। वहाँ हमारी औरतें जब चीज़ें ख़रीदने के लिए दुकान पर जाती हैं, तो दुकानदार कहता है कि तुम अहमदिया हो, दुकान से निकल जाओ।" इस पर कांग्रेस मैन ने अर्ज़ किया कि कैसे पता चल जाता है कि यह अहमदिया है, तो उस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अहमदियों के क़िरदार, रवैये और रख-रखाव से पता चल जाता है और मौलवी भी जासूसी करते हैं, अहमदियों पर नज़र रखते हैं, तो इल्म हो जाता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "अब पाकिस्तान में यह भी हुआ है कि ईद-उल-अज़हा के मौक़े पर क़ुर्बानी की जाती है। ईद के बाद पुलिस एक अहमदिया के घर आई। जानवर भी ले गई और अहमदिया को भी साथ ले आई। अब वहाँ तो पुलिस, पब्लिक, मौलवी सब अहमदियों के ख़िलाफ़ परसेक्यूशन में इंवॉल्व (संलग्न) हैं।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "अब पाकिस्तान में अहमदियों के ख़िलाफ़ नफ़रत का यह मियार है कि इमरान ख़ान ने मौलवियों के दबाव से मजबूर होकर एक अहमदिया इकॉनमिस्ट (अर्थशास्त्री) अतीफ़ मियां को इकोनॉमिक एडवाइज़री काउंसिल से निकाल दिया है।"

कांग्रेस मैन ने अर्ज़ किया कि अब वह पहले की निस्बत बढ़कर जमाअत के साथ मिलकर अहमदियों की परसेक्यूशन के हवाले से काम करेंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 1999 में जो वक़्त जेल में गुज़ारा था, कांग्रेस मैन ने उस हवाले से भी सवाल किए और काफ़ी दिलचस्पी का इज़हार किया। कहने लगे कि अहमदियों की परसेक्यूशन उन्हें यहूदियों के साथ होने वाले ज़ुल्मों की याद दिलाती है।

कांग्रेस मैन जैमी रस्किन की हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात सवा ग्यारह बजे तक जारी रही। आख़िर पर मोज़ूफ़ ने हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का शरफ़ पाया।

बाक़ी आइंदा...

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

जगह यहूद और ईसाइयों को मुसलमानों का 'आमीन' पढ़ना बुरा लगता था तो सहाबा ख़ूब ऊँची पढ़ते थे। मुझे हर दो तरह मज़ा आता है। कोई ऊँचा पढ़े या आहिस्ता पढ़े।"

(बद्र नंबर 32 जिल्द 11, 23 मई 1912, पृष्ठ 3)

हज़रत मियां अब्दुल्लाह साहिब सनोरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं: "मैंने हज़रत साहिब को कभी रफ़उल यदैन (हाथ उठाना) करते या 'आमीन' बिल-जहर कहते नहीं सुना और न कभी 'बिस्मिल्लाह' बिल-जहर पढ़ते सुना है।"

ख़ाकसार हज़रत साहिबज़ादा मिर्जा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु अर्ज़ करता है कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का तरीक़-ए--अमल वही था जो मियां अब्दुल्लाह साहिब ने बयान किया लेकिन हम अहमदियों में हज़रत साहिब के ज़माने में भी और आप के बाद भी यह तरीक़-ए--अमल रहा है कि इन बातों में कोई एक दूसरे पर गिरफ़्त नहीं करता। बाज़ 'आमीन' बिल-जहर कहते हैं, बाज़ नहीं कहते। बाज़ रफ़उल यदैन करते हैं, अक्सर नहीं करते। बाज़ 'बिस्मिल्लाह' बिल-जहर पढ़ते हैं, अक्सर नहीं पढ़ते। और हज़रत साहिब फ़रमाते थे कि दरअस्ल यह सब तरीक़ आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम से साबित हैं मगर जिस तरीक़ पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कसरत के साथ अमल किया वह वही तरीक़ है जिस पर ख़ुद हज़रत साहिब का अमल था।"

(सीरतुल महदी जिल्द अव्वल, पृष्ठ 147-148, रिवायत नंबर 154, मतबूअ फरवरी 2008)

प्रश्न : एक खातून ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से इस्तिफ्सार किया कि अल्लाह तआला को ताक (विषम) नंबर क्यों पसंद है? 2 अल्लाह तआला ने अपने लिए क़ुरआन-ए-करीम में मुज़क्कर (पुल्लिंग) का शब्द क्यों इस्तेमाल किया है? 3. क्या यह बात सही है कि जन्नत में उच्च स्थान वाले लोग अपने से कम मक़ाम वालों को तो मिल सकेंगे, लेकिन कम दर्जा वाले उच्च दर्जा वालों से नहीं मिल सकेंगे? 4. एक दहरिया (नास्तिक) को कैसे समझाया जा सकता है कि अल्लाह तआला ने आख़िरकार इंसानों को माफ़ करके जन्नत में ले जाना है?

जवाब: आप के पहले सवाल का जवाब तो हदीस में भी बयान हुआ है कि अल्लाह तआला चूंकि ख़ुद एक है और एक का हिंदसा ताक है इस लिए अल्लाह तआला को ताक पसंद है। चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: إِنَّ اللهَ وِتْرٌ يُحِبُّ الْوِتْرَ। यानी अल्लाह तआला यक़ीनन वित्र (एक, विषम) है और वित्र को पसंद करता है।

(सहीह मुस्लिम, किताब उज़्-ज़िक्र वद्दुआ वत्-तौबत वल-इस्तिग़फ़ार, बाब फी अस्माइल्लाहि तआला व फ़ज़्ले मन अहसाहा)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस मज़मून को बयान करते हुए फ़रमाते हैं: "हमें अल्लाह तआला का यह क़ानून नज़र आता है कि वह ताक चीज़ों को पसंद करता है। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमेशा फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआला ताक चीज़ों को पसंद करता है। वह ख़ुद भी एक है और दूसरी अश्या के मुताल्लिक भी वह यही पसंद करता है कि वह ताक हों। इसलिए यह हिक्मत हमें हर जगह नज़र आती है। मगर यह एक अलग और वसीअ मज़मून है जिस को इस वक़्त बयान नहीं किया जा सकता। वर्ना हक़ीकत यह है कि तमाम क़ानूने-कुदरत में अल्लाह तआला ने ताक को क़ाएम रखा है और उस के हर क़ानून पर ताक हावी है। क़ुरआन करीम के मुहावरों और सोले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुहावरों से यह भी मालूम होता है कि सात के अदद (अंक) को तकमील के साथ ख़ास तौर पर तअल्लुक़ है। चुनांचे क़ुरआन करीम में आता है कि अल्लाह तआला ने दुनिया को सात दिन में बनाया। इसी तरह इंसान की रूहानी तरक़्क़ियात के सात ज़माने हैं। फिर आसमानों के लिए भी क़ुरआन करीम में सबअ समावात (सात आसमान) के अल्फ़ाज़ आते हैं और यह ताक का अदद है। तो ताक का अदद अल्लाह तआला के हुज़ूर ख़ास हिक्मत रखता है और उस का मुज़ाहिरा हम तमाम क़ानूने-कुदरत में देखते हैं।"

(रोज़नामा अल-फ़ज़ल कादियान दारुल अमान तिथि 7 अप्रैल 1939, पृष्ठ 5)

★ ★ ★ शेष ..

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 28 August 2025 Issue No. 35

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

क्या कोई पिता अपनी बेटी के पीछे तरावीह की नमाज़ अदा कर सकता है? क्या सूरह फातिहा के बाद दोबारा सूरह फातिहा पढ़ने के बाद सूरह अल-बक़रा की क़िराअत शुरू की जा सकती है? क्या ज़ाहिरी (जोर से पढ़ी जाने वाली) नमाज़ों में सूरतों की क़िराअत से पहले "बिस्मिल्लाह" भी ऊँची आवाज़ में पढ़नी चाहिए?

अल्लाह तआला को विषम संख्या (ताक़ नंबर) क्यों पसंद है?

अल्लाह तआला ने अपने लिए क़ुरआन मजीद में पुल्लिंग (मुज़क्कर) का सिग़ा क्यों इस्तेमाल किया है?

क्या कम मक़ाम वाले जन्नती अपने से उच्च मक़ाम वालों से मिल सकेंगे?

एक नास्तिक (दहरिया) को कैसे समझाया जा सकता है कि अल्लाह तआला ने आख़िरकार इंसानों को माफ़ करके जन्नत में ले जाना है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-40)

प्रश्न: कुरआन-ए-करीम की हाफ़िज़ा एक बच्ची ने हज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में पत्र के माध्यम से पूछा कि क्या मेरे वालिद साहिब मेरी इक़्तिदा (इमामत) में नमाज़-ए-तरावीह अदा कर सकते हैं? और अगर नमाज़ में कुरआन करीम की तिलावत का आग़ाज़ करना हो तो क्या पहली रकअत में सूरह फातिहा के बाद दोबारा सूरह फातिहा पढ़ने के बाद सूरह अल-बक़रा की क़िराअत शुरू की जाएगी? साथ ही, क्या जहरी नमाज़ों (जोर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों) में सूरतों की क़िराअत से पहले "बिस्मिल्लाह" भी ऊँची आवाज़ में पढ़नी चाहिए? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मक़्तूब मूरख़ा 25 जुलाई 2021 में इस सवाल के जवाब में ज़ेर-ए-ज़िल हिदायात अता फ़रमाईं। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

जवाब: इस्लाम ने नमाज़ बाजमाअत की फ़र्ज़ियत सिर्फ़ मर्दों पर आएद फ़रमाई है और औरतों का बाजमाअत नमाज़ अदा करना महज़ नफ़ली हैसियत क़रार दिया है। इस लिए मर्दों की मौजूदगी में कोई औरत नमाज़ बाजमाअत में उन की इमाम नहीं बन सकती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप के बाद खुलफ़ा-ए-राशिदीन ने कभी किसी औरत को मर्दों का इमाम मु-क़र्रर नहीं फ़रमाया। इसी तरह इस ज़माने के हुक्म व अद्ल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी जब कभी किसी अलालत (बीमारी) की वजह से घर पर नमाज़ अदा फ़रमाते तो बावजूद अलालत के नमाज़ की इमामत ख़ुद कराते। पस नफ़्ल नमाज़ हो या फ़र्ज़, अगर किसी जगह मर्द और औरतें दोनों मौजूद हों तो नमाज़ बाजमाअत की सूरत में नमाज़ का इमाम मर्द ही होगा।

नमाज़ के दौरान कुरआन-ए-करीम की तिलावत आग़ाज़ से शुरू करते वक़्त भी तरीक़ यही है कि नमाज़ में पढ़ी जाने वाली सूरह फातिहा पढ़ने के बाद सूरह अल-बक़रा की तिलावत शुरू की जाएगी, दोबारा सूरह फातिहा नहीं पढ़ी जाएगी। अलबत्ता फ़ुक़हा ने इस बात की इजाज़त दी है कि कुरआन करीम ख़त्म करने की सूरत में अगर कोई शख़्स नमाज़ में सूरह अन-नास के बाद दोबारा कुरआन करीम का कुछ इब्तिदाई हिस्सा पढ़ना चाहे तो वह सूरह फातिहा से आग़ाज़ कर सकता है और उस के बाद सूरह अल-बक़रा का भी कुछ हिस्सा पढ़ सकता है, इसमें कुछ हरज की बात नहीं लेकिन इब्तिदा में सूरह फातिहा का तकरार (दोहराव) बाज़ फ़ुक़हा के नज़दीक मूजिब-ए-सजदा-ए-सहव है।

नमाज़ में सूरत की तिलावत शुरू करने से पहले "बिस्मिल्लाह" बुलंद आवाज़ में पढ़ना या आहिस्ता पढ़ना हर दो तरीक़ दुरुस्त और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से साबित हैं। चुनांचे हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु सब के पीछे नमाज़ पढ़ी है लेकिन उन में से किसी एक को भी मैंने 'बिस्मिल्लाह' बिल-जहर पढ़ते नहीं सुना।"

(सहीह मुस्लिम, किताब उस-सलाह, बाब हुज्जत मन क़ाला ला युजहिरु बिल-बिस्मिल्लाह)

नईम बिन अल्-मुजमर रिवायत करते हैं कि "मैंने हज़रत अबू हुरैरा रज़ि-यल्लाहु अन्हु की इमामत में नमाज़ पढ़ी, उन्होंने 'बिस्मिल्लाह' ऊँची आवाज़ में तिलावत की फिर सूरह फातिहा पढ़ी। फिर जब 'ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वला अज़-ज़ॉल्लीन' पर पहुँचे तो उन्होंने 'आमीन' कही तो लोगों ने भी 'आमीन' कही। जब आप सजदा में जाते तो 'अल्लाहु अकबर' कहते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो 'अल्लाहु अकबर' कहते। फिर जब आप ने सलाम फेरा तो कहा: 'मुझे क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में मेरी जान है, मैं नमाज़ के मामले में तुम में से सब से ज़्यादा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नमाज़ से मुशाबिह हूँ (यानी मेरी नमाज़ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नमाज़ से मिलती-जुलती है)।'"

(सुनन नसाई, किताब उल-इफ़्तिताह, बाब क़िराअत बिस्मिल्लाहिर्रहमा-निर्रहीम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम जहरन (ऊँची आवाज़ में) पढ़ा करते थे।" (अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब उल-इमामह व सलातिल जमाअह, बाब उत-तामीन)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: "'बिस्मिल्लाह' जहरन और आहिस्ता पढ़ना हर दो तरह जाएज़ है। हमारे हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब (अल्लाहुम्मग़फ़िरलहू वरहमहू) जोशीली तबीयत रखते थे। 'बिस्मिल्लाह' जहरन पढ़ा करते थे। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्स-लाम जहरन नहीं पढ़ते थे। ऐसा ही मैं भी आहिस्ता पढ़ता हूँ। सहाबा में हर दो क़िस्म के गिरोह हैं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि किसी तरह कोई पढ़े उस पर झगड़ा न करो। ऐसा ही 'आमीन' का मामला है हर दो तरह जाएज़ है। बाज़

शेष पृष्ठ 11 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad